शिव आमंत्रण
आध्यात्म की नई उड़ान
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
वर्ष • 10 | अंक • 01 | हिन्दी (मासिक) | जनवरी • 2023 | पृष्ठ • 16 मूल्य • ₹ 12.50

नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

2023

यह 23 संकल्प बदल देंगे आपकी जिंदगी...

उम्मीदों का साल, 23 वां साल: रोशनी की किरण है, आध्यात्म का उजाला

शिव आमंत्रण **आबू रोड।** नए साल में हम नए संकल्प करते हैं लेकिन कुछ दिनों बाद ही जिंदगी की गाड़ी पुराने ढर्रे पर आ जाती है। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह है उस संकल्प के प्रति मेहनत नहीं करना। वह संकल्प कैसे पूरा होगा, उसकी गाइडलाइन क्या रहेगी, वह क्षमता के मुताबिक है कि नहीं, यदि इन सब बातों पर गौर करके हम कोई नया संकल्प लेते हैं और रोज उसे मन ही मन बार-बार दोहराते हैं तो निश्चित है कि उसे पूरा करके ही रहेंगे। पूरी तैयारी के साथ 2023 में हम भी जीवन बदलने के लिए 23 ऐसे संकल्प लेते हैं जो जीवन की दशा और दिशा को पूरी तरह से बदल देंगे...

» **परमात्मा का ध्यान:** हमारा जीवन परमात्मा की देन है। उपहार है। रोज परमात्मा का ध्यान जरूर करें। इतना सुंदर जीवन बनाने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करें। प्रत्येक कर्म में उनके साथ का अनुभव करें। हर कर्म में उन्हें साथी बना लें, सफलता आपकी साथी बन जाएगी। पहला संकल्प यही हो कि कितनी भी व्यस्त दिनचर्या हो रोज कुछ पल एकांत में बैठकर ईश्वर का ध्यान जरूर करेंगे।

» **सत्संग:** जैसा संग, वैसा रंग। हमारी संगत ही हमारे व्यक्तित्व को दर्शाती है। सकारात्मक दृष्टिकोण, खुशमिजाज, उत्साही, ईमानदार और लगनशील लोगों की संगत करें। इससे हमेशा कुछ न कुछ नया सीखने को मिलेगा।

» **स्वाध्याय:** रोज सद्साहित्य का अध्ययन करें। महापुरुषों की जीवनी, धर्मग्रंथ का नियमित अध्ययन अपनी दिनचर्या में शामिल हो। अच्छे साहित्य के अध्ययन से हमारी विचार शक्ति बढ़ती है, कुछ करने की प्रेरणा मिलती है।

» **ध्यान:** ध्यान, मेडिटेशन में ही सभी मानसिक व्याधियों का समाधान समाया हुआ है। मेडिटेशन से मन शक्तिशाली और शांत होता है, चिंतन में सकारात्मकता आती है। एकाग्रता और याद्दाश्त बढ़ती है। तनाव से मुक्त रहते हैं।

» **अपनी दिनचर्या बनाएं:** यदि जीवन में आन्तरिक और बाहरी तरक्की चाहिए तो उसके लिए अपनी निर्धारित दिनचर्या बनायें। इसके लिए जल्दी सोयें, जल्दी उठें, मेडिटेशन, ध्यान के साथ कार्य व्यवहार और फिर अपने लिए कुछ समय निकालें जिससे यह सोच सकें कि दिनभर क्या गलत हुआ और क्या अच्छा हुआ।

» **क्रिएटिव:** क्रिएटिव होना आज के दौर की सबसे बड़ी जरूरत है। जो क्रिएटिव नहीं हैं वो रेस में नहीं हैं। नए साल में संकल्प करें कि आप क्रिएटिव बनेंगे। रोज कुछ न कुछ नया सीखेंगे।

» **जिम्मेदारी:** जिम्मेदारी लेना सीखें। बड़े कामों में आपकी भूमिका भी बड़ी हो, इतने काबिल बनें। बिना जिम्मेदारी का ताज पहने हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं।

» **प्रकृति:** प्रकृति से प्रेम करें। रोज कुछ पल प्रकृति के बीच गुजारें। मां प्रकृति का आभार व्यक्त करें। पांचों तत्वों का आभार व्यक्त करें। जो हमें बिना किसी अपेक्षा के सदा देते और देते ही रहते हैं। प्रकृति से जीवन में देना सीखें।

» **प्रेम-दया:** दया धर्म का मूल है। दयावान बनें। आसपास के जीव-जंतुओं, लोगों के प्रति दया का भाव रखें। जरूरतमंद की मदद करें। साहसी होने के साथ ही हमारे भीतर प्रेम और दया का भाव भी होना चाहिए। वो शक्ति किसी काम की नहीं, जिसमें प्रेम और दया का भाव न हो।

» **अहंकार को छोड़ें:** देहभान या देहअभिमान सर्व दुर्गुणों का कारण है। ईगो को छोड़े और झुकना सीखें। जिसका व्यक्तित्व जितना विशाल और समृद्ध होता है वह उतना ही झुकता है। आम के पेड़ में जब फल लगता है तो उसकी टहनियां झुक जाती हैं।

» **पॉजीटिव एटिट्यूड:** मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से सीखने लायक सबसे बड़ी चीज है कि जीवन में सदा पॉजीटिव एटिट्यूड (सकारात्मक दृष्टिकोण) रखें। हमेशा सकारात्मक सोचें। परिस्थितियों के बदलने से विचलित न हों। सकारात्मक सोच से बड़ी से बड़ी विपदा से बाहर निकल सकते हैं।

» **दूरदर्शी बनें:** सर्वगुण संपन्न, 16 कला संपूर्ण श्रीकृष्ण के जीवन से संदेश मिलता है कि आप जो भी करें उसमें आपका विजन साफ होना चाहिए। अगर आपका विजन सही है तो आपकी सफलता भी तय है। इसलिए अपना विजन क्लीयर रखें।

» **खुद में वैराग्य का भाव रखें:** हमारे भीतर अटैचमेंट के साथ डिटैचमेंट यानी चीजों से अलग होने का भाव भी होना चाहिए। यदि हम सुख-सुविधाओं से घिरे रहेंगे तो कभी बड़े कामों के लिए तैयार नहीं हो पाएंगे। डिटैचमेंट यानी वैराग्य भी जरूरी है। आध्यात्म प्रेमियों के लिए वैराग्य पहली और अनिवार्य शर्त है। वैराग्य के बिना आध्यात्म अधूरा है।

» **पुराने को मिटाते जाएं:** हमें अपने कामों में सिलेक्टिव डिस्ट्रक्शन के मोड पर आना चाहिए। गलतियों को सुधारें, खत्म करें। जो गलत हो रहा है और हम उसमें अपना मोह लगाए हुए हैं, उससे अलग हों। गलतियों को दोहराएं नहीं। जीवन में चेंक एंड चेंज को फॉलो करें।

» **सेहत का ख्याल रखें:** पहला सुख निरोगी काया। सुखी जीवन के लिए स्वस्थ शरीर का होना आवश्यक है। जब आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तो आप खुश रहेंगे और जीवन में तरक्की करेंगे। खुद को स्वस्थ रखने का संकल्प लें। बिना सेहत के आप जप-तप-ध्यान भी नहीं कर सकते हैं। ध्यान की सर्वोच्च स्थिति उपराम, विदेही स्थिति को प्राप्त करने के लिए स्वस्थ शरीर जरूरी है।

» **समय का सदुपयोग:** आप बस समय का सही उपयोग करना सीख जाओ, कामयाबी अपने आप मिल जाएगी। जब हर कार्य समय पर होगा तो सफलता अपने आप मिलती ही है। इससे जीवन में अनुशासन आता है, एक गुण आने से अन्य दिव्य गुण अपने आप आ जाते हैं। गपशप, परचिंतन, व्यर्थ विचारों को आज से ही त्याग दें। सारा समय स्व चिंतन और प्रभु चिंतन में लगा दें।

» **खुश रहना सीखें:** जीवन में सबकुछ चला जाए लेकिन खुशी न जाए। खुशी जीवन का गहना है। खुशी आत्मा, मन की खुराक है। हर कोई खुश व्यक्ति को पसंद करता है। जब हम खुश होते हैं तो ब्रेन की पावर बढ़ जाती है। नए विचार आते हैं। सबकी दुआ के पात्र बनते हैं।

» **दुआ दें और दुआ लें:** जीवन में हम सभी को दुआ जरूर लेनी हैं। रोजाना के दैनिक जीवन में कुछ न कुछ ऐसे कार्य जरूर करें जिससे लोगों की दुआएं मिलें। साथ ही खुद भी दूसरों को दिल से दुआ दें। क्योंकि हम जैसा देते हैं वैसा ही हमें मिलता है।

» **मदद दें, मदद लें:** जीवन के किसी भी मोड़ पर जहां आपको किसी के सहारे या मदद की जरूरत हो तो बेहिचक उसे लें। साथ ही आप भी दूसरों की मदद करें। इस सृष्टि में एक-दूसरे के सहयोग और मदद के बिना जीवन संभव नहीं है। इसलिए परेशानी से घिरे जरूरतमंद की मदद और सहयोग के लिए खुद को मानसिक रूप से तैयार रखें।

» **परिवार को समय दें:** हमारे सुख-दुख में सबसे पहले साथी हमारे परिवार के सदस्य ही होते हैं। मनमुटाव, गलतफहमियों में पड़कर रिश्तों में गांठ न पड़ जाए। थोड़ा झुककर, थोड़ा सहन करके यदि रिश्ते बचते हैं तो यह पहल जरूर करें। परिवार के बीच समय दें। अपने मन की बातें करें। एक दूसरे के सुख-दुख के अनुभव सांझा करें।

» **शुद्ध व सात्विक अन्न:** जैसा अन्न, वैसा मन। हम दैवी-देवताओं के घराने की दिव्य आत्माएं हैं, इसलिए हमारा अन्न भी देवताओं की तरह शुद्ध, सात्विक और पवित्र हो। बाहर के भोजन से बचें। परमात्मा का स्मरण कर आभार व्यक्त कर शाकाहारी भोजन करें। जिस भोजन में दुःख, दर्द, तकलीफ, नकारात्मक बाइब्रेशन (मांसाहारी भोजन) भरी हो उसे खाकर हम खुश, चिंतामुक्त और आनंदित कैसे रह सकते हैं? यदि आप ऐसा भोजन करते हैं तो नए साल पर संकल्प करें और आज से ही त्याग दें।

» **मन का स्वास्थ्य:** हम शरीर से तो फिट होते हैं लेकिन यह भी देखें कि कहीं हमारे जीवन में निराशा, चिंता, तनाव, डिप्रेशन, नेगेटिव थिंकिंग, द्वेष, ईर्ष्या जैसे मानसिक विकारों ने तो नहीं घेर रखा है। शरीर की तरह मन के स्वास्थ्य का बराबर ध्यान रखें।

» **सीमित मोबाइल को उपयोग:** आज हर जेब में स्मार्ट फोन है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि हम जरूरत होने पर मोबाइल को उपयोग करें। आज लोगों को सबसे ज्यादा समय मोबाइल में ही व्यर्थ जा रहा है। मोबाइल और सोशल मीडिया उपयोग के लिए खुद की गाइडलाइन बनाएं।

हम बढ़ते गए... कारवां जुड़ता गया

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। मधुबन न्यूज़ की नींव आज से एक वर्ष पूर्व 'हमारा प्रयास-आपकी मुस्कान' के ध्येय वाक्य और संकल्प के साथ रखी गई। इस एक साल के सफर में हमने कई कीर्तिमान रचे। दर्शकों से मिले अपार प्यार-स्नेह ने इस सफर को रोचक और यादगार बना दिया। मधुबन न्यूज़ में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ीं पल-पल की ताजातरीन खबरें, हर छोटी-बड़ी सूचना का अपडेट, ब्रेकिंग न्यूज़ और फास्ट न्यूज़ दर्शकों के दिलों पर छा गईं। स्पेशल स्टोरी के माध्यम से जहां दर्शकों को संस्थान से जुड़ीं अनदेखी, रोचक जानकारियां मिलीं तो इंटरव्यू और लाइव, ग्राउंड रिपोर्टिंग से पल-पल की अपडेट। खबर को सीधे सपाट और रोचक अंदाज में देने के तरीके को दर्शकों ने दिल से स्वीकारा। यही कारण रहा कि इस छोटी सी अवधि में सब्सक्राइबर्स का आंकड़ा एक लाख के करीब पहुंच गया है। अब तक देश-विदेश में एक करोड़ 51 लाख लोगों ने मधुबन न्यूज़ के प्लेटफार्म पर पहुंचकर खबरें देखीं और सुनी हैं।

मधुबन न्यूज़ में यह सब खास-

ब्रेकिंग न्यूज़: संस्थान के भारत सहित विश्व के 142 देशों में स्थित सेवाकेंद्रों पर होने वाले मेगा इवेंट और सूचनाओं को सबसे पहले हमने ब्रेक किया।

रेगुलर बुलेटिन: इसमें सामान्य और विशेष कार्यक्रमों को नियमित रूप से बुलेटिन के माध्यम से दर्शकों तक खबरें पहुंचाई जा रहीं हैं।

स्पेशल स्टोरी: ब्रह्माकुमारीज़ बड़े पैमाने पर कई अभियान और प्रोजेक्ट चला रही है। ऐसे प्रोजेक्ट और समाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दों, अभियानों को स्पेशल स्टोरी के माध्यम से खोजकर दर्शकों तक पहुंचाई जा रहीं है।

लाइव रिपोर्टिंग: मेगा शहरों में होने वाले मेगा इवेंट को लाइव चलाया जाता है।

ग्राउंड रिपोर्टिंग: ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं के परिणामस्वरूप आए बदलाव को ग्राउंड रिपोर्टिंग के माध्यम से दर्शकों तक खबरें पहुंचाने का प्रयास जारी है।

इंटरव्यू: अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू आने वालीं जानीं-मानीं हस्तियों के इंटरव्यू के माध्यम से दर्शकों को रुबरु कराया जाता है।

फास्ट न्यूज़: इसमें पांच मिनट के अंदर 50 छोटी-बड़ी खबरों का बुलेटिन लगातार जारी है।

1. दर्शकों के अपार स्नेह-प्यार से एक साल में एक लाख के करीब हुए सब्सक्राइबर्स
2. 1.51 करोड़ लोगों ने देखीं खबरें
3. अभिनेत्री शहनाज गिल की स्टोरी को 13 लाख लोगों ने देखा
4. ताजातरीन खबरों के लिए मधुबन न्यूज़ के रिपोर्टर्स देशभर में तैनात

मधुबन न्यूज़ ईश्वरीय सेवाओं में अपना एक साल पूरा कर रहा है। इसके लिए पूरी टीम को दिल से शुभकामनाएं और बधाई देती हूं। मुझे बहुत खुशी है कि इतने कम समय में चैनल ने बड़ी उपलब्धि प्राप्त की है। आगे भी यह चैनल तरक्की करते हुए सब की दुआएं प्राप्त करता रहे।

राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी,
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मैं अमेरिका में रहते हुए भी मधुबन न्यूज़ रोज सुनती हूं। मुझे एक जगह बैठे देश-विदेश के ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का न्यूज़ आसानी से जानने को मिल जाता है। मधुबन न्यूज़ टीम को मुबारक देना चाहती हूं कि एक साल से आपने यह कुशलता पूर्वक कार्य किया और आगे भी करते रहें।

बीके मोहिनी बहन, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, अमेरिका

मधुबन न्यूज़ की टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने बहुत ही प्रेम से पिछले एक साल से बहुत सेवाएं की है। बहुत ही सरल और रोचक तरीके से इसमें संस्थान की सेवाओं को न्यूज़ के माध्यम से दिखाया जाता है। इसी तरह परमात्मा का संदेश जन-जन तक पूरे विश्व में फैलता रहे, हमारी यही शुभकामनाएं हैं।

बीके जयंती बहन, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, लंदन

मधुबन न्यूज़ से सबको सब न्यूज़ मिलती है, बहुत सेवाएं होती है। अब तक यह चैनल पिछले एक साल से सेवाएं दे रही है तो हम चाहेंगे कि आगे भी यह दिन दूनी-रात चौगुनी अपनी सेवाएं देती रहे। सब उन्नति करते रहे। बाबा की सेवाओं की जानकारी सबको मिलती रहे, यही शुभकामना है।

बीके मुन्नी बहन,
संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

एक साल के अंदर सभी दर्शकों के सपोर्ट से मधुबन न्यूज़ बेहतरीन प्रदर्शन कर रहा है। हमारे इस चैनल के लिए दर्शक ही सब कुछ है। अति फास्ट जिसको कहते हैं आज तक, अब तक देश-विदेश तक सेंटरों पर जो भी सेवाएं हो रही है वह चैनल के माध्यम से जन-जन तक पहुंचे यही शुभकामनाएं हैं।

बीके करुणा भाई,
मीडिया निदेशक, ब्रह्माकुमारीज़

मधुबन न्यूज़ चैनल के नाम से जो देश-विदेश में सेवाएं हो रही है उसका प्रभाव समाज और व्यक्ति के ऊपर बहुत ही पॉजिटिव तरीके से हो रहा है। एक साल के अंदर जो कोई चैनल प्रसिद्ध नहीं हुआ, वहां यह चैनल लोगों के बीच बहुत ही पॉपुलर हो रहा है।

बीके मृत्युंजय,
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़

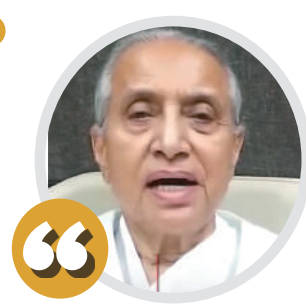

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मधुबन न्यूज़ की टीम ने एक साल के अंदर बहुत ही वंडरफुल कार्य किया है। अफ्रीका में रहते हुए मैं हमेशा यह न्यूज़ देखती और सुनती हूं। क्योंकि पूरी दुनिया की ब्रह्माकुमारीज़ से संबंधित जानकारियां मिल जाती है। जब अफ्रीका का भी पॉजीटिव न्यूज़ जानने को मिलता है तो बहुत खुशी होती है।

बीके वेदांती बहन, अफ्रीका सेवाकेंद्रों की निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़

बहुत खुशी की बात है कि मधुबन न्यूज़ पिछले एक साल से बहुत सुंदर अपनी सेवाएं दे रहा है। देश-विदेश के सुंदर समाचार जानने को मिलते है। परमात्मा के ईश्वरीय सेवाओं का जो विस्तार हो रहा है, उसको बहुत सुंदर तरीके से प्रस्तुत करने के लिए पूरी टीम ने बहुत अच्छी मेहनत की है। दिल से हार्दिक बधाई, शुभकामनाएं।

बीके राजू,
उपाध्यक्ष, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग

दूसरे वर्ष में मधुबन न्यूज़ प्रवेश करने के लिए बहुत ही बधाई, मैं चाहती हूं कि इस चैनल द्वारा समाज में पॉजिटिविटी पहुंचे। मेरी खुशकिस्मती है कि मैं इस न्यूज़ चैनल के स्टूडियो में आई और इंटरव्यू भी दिया इसी तरह मधुबन न्यूज़ अपनी मधुरता से अच्छे से अच्छे न्यूज़ बरसाती रहे।

अभिनेत्री पूनम कौर,
बॉलीवुड, मुंबई

मैं मधुबन न्यूज़ को बधाई देते हुए सोच रहा हूं कि यह न्यूज़ चैनल एक आश्चर्यजनक काम कर रहा है, मन को शांत करने के लिए, समाज में सकारात्मक विचारों को फैलाने के लिए और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए बेहतरीन सेवा प्रदान कर रही है। संस्थान से जुड़ी ताजा खबरें मिलती हैं।

बीके चार्ली,
निदेशक, आस्ट्रेलिया, ब्रह्माकुमारीज़

ओम् शांति रिट्रीट सेंटर] बाइक रैली का समापन, यात्रियों का किया सम्मान

छह हजार किमी की यात्रा, 100 शहर में पहुंची

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम/हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के गुरुग्राम स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में सुरक्षित भारत कार्यक्रम के तहत बाइक रैली का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संस्था के यातायात प्रभाग द्वारा सभी बाइकर्स को सम्मानित भी किया गया। पूरे देशभर से संस्था के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने शिरकत की। प्रभाग की उपाध्यक्ष बीके दिव्याप्रभा ने कहा कि दुर्घटनाओं का मूल कारण मानसिक तनाव है। राजयोग के माध्यम से मन के विचार संयमित होते हैं। सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करना ही बाइक रैली का मुख्य उद्देश्य है।

भारतीय मजदूर संघ के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अनुपम राज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम में आकर मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं। ब्रह्माकुमारीज़ पूरे विश्व को भारत की प्राचीन संस्कृति से परिचित करा रही है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ की व्यवस्था अनुकरणीय एवं सराहनीय है जिसका मूल कारण आध्यात्मिकता और पवित्रता है। ओआरसी की निदेशिका बीके आशा ने कहा कि जीवन में अनुशासन बहुत जरूरी हैं। मन की गति जितनी कम होगी, दुर्घटनाएं भी उतनी ही कम होंगी। योग से जीवन में अनुशासन एवं धैर्यता आती है। माउंट आबू से पधारे बीके सुरेश एवं मोटिवेशनल स्पीकर बीके ईवी स्वामीनाथन ने भी रोड सेफ्टी पर अपने सुझाव दिए।

ओआरसी परिसर में सड़क सुरक्षा के परिवेश में शोभायात्रा निकाली। जिसमें स्लोगन के माध्यम से संदेश दिया। कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय तीरंदाज सिमरनजीत कौर, गुरुग्राम के एसीपी (ट्रैफिक) अखिल कुमार, पूर्व आईएएस आचार्य सलिल, मारुति सुजुकी के चीफ एचआर ऑफिसर सुनील द्विवेदी एवं अंतर्राष्ट्रीय शूटर संजीत राजपूत ने भी अपनी शुभकामनाएं दी। बीके मंजू ने राजयोग के अभ्यास द्वारा सबको शांति की गहन अनुभूति कराई। संचालन बीके कुन्ती, बीके दिव्या एवं बीके विधात्री ने किया। इस अवसर पर सभी से रोड सेफ्टी की प्रतिज्ञा भी करवाई गई। उल्लेखनीय है कि अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत बाइक रैली ने 100 से भी अधिक शहरों से होते हुए 6000 किलोमीटर की यात्रा पूरी की। इस दौरान 500 से भी अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 6000 रोड सेफ्टी मैसेंजर्स ने इसमें हिस्सा लिया। इन कार्यक्रमों के तहत कई जगहों पर पौधारोपण भी किए गए।

राष्ट्रपति से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, पुरी/ओड़िसा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के पुरी आगमन पर राजभवन में बीके निरुपमा, बीके प्रतिमा और बीके सत्यानंद ने मुलाकात कर गॉडली राजयोग रिट्रीट सेन्टर आने का निमंत्रण दिया।

बहनों ने परमात्म संदेश दिया

शिव आमंत्रण, मोकामा (बिहार)। नगर परिषद कार्यालय में कार्यपालक पदाधिकारी मुकेश कुमार को बीके निशा तथा बीके गुड़िया नें संस्था का परिचय देते हुए ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराया।

संगीत से आध्यात्मिक क्रांति लाएगी 'विश्व शांति'

शिव आमंत्रण, उदयपुर/राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ मोती मगरी स्कीम में 'संगीत के द्वारा आध्यात्मिक क्रांति लाएगी विश्व शांति' संगीत संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें मुंबई बॉलीवुड प्लेबैक सिंगर श्रुति जकाती एवं सुखीराम मंडा ने परमात्म स्मृति के सुंदर अनुभूतिप्रद गीत गाकर लोगों को परमात्म मिलन का अनुभव कराया। साथ में माउंट आबू से पधारे राजयोगी सतीश एवं नितिन भाई ने कार्यक्रम में समां बांध दिया। नगर निगम के पूर्व महापौर चंद्र सिंह कोठरी ने कहा कि यह एकमात्र ऐसी संस्था है जो समाज के हर प्रभाग की सेवा करती है। अन्य कोई भी ऐसी सेवा नहीं करते। बहनें दिल को स्पर्श करने वाली बातें बताती हैं। एनसीसी के ग्रुप कमांडर कर्नल भास्कर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों के संपर्क में आकर मैंने हर परिस्थिति में अपने को समायोजन करके खुश रहना सीखा है। नगर निगम के डिप्टी मेयर पारस सिंघवी, राजस्थान विद्यापीठ के वाइस चांसलर सारंगदेवोत, सिंधी समाज के अध्यक्ष प्रताप राय चुग, कलेक्टर तारा चंद मीना मुख्य रूप से मौजूद रहे। सेवाकेंद्र संचालिका बीके रीटा ने सभी गीतों का आध्यात्मिक अर्थ समझाते हुए ईश्वरीय अनुभूति कराई।

सार समाचार

मुख्यमंत्री से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, भोपाल/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू से गीता विशेषज्ञ राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी के भोपाल आगमन पर नीलबड़ स्थित सुख-शांति भवन की निदेशिका बीके नीतू, बीके राम ने मुख्यमंत्री निवास पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात की। इस दौरान बीके ऊषा ने संस्थान द्वारा की जा रहीं सेवाओं और राजयोग मेडिटेशन पर सीएम चौहान से चर्चा की। साथ ही माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया।

किसान अभियान का स्वागत

शिव आमंत्रण, त्रिपाठी नगर/लखनऊ। आत्म निर्भर किसान अभियान के राज्य कृषि प्रबंध संस्थान उत्तर प्रदेश पहुंचने पर संस्थान के निदेशक डॉ. पंकज त्रिपाठी, अपर निदेशक डॉ. पीके गुप्ता, अन्य वरिष्ठ अधिकारी और वरिष्ठ अधिकारी बद्री विशाल तिवारी का स्वागत करते हुए अभियान दल का नेतृत्व कर रहीं बीके इंद्रा दीदी।

आईएमटी एक्सपो में दिया संदेश

शिव आमंत्रण, फरीदाबाद/हरियाणा। आईएमटी इंडस्ट्रियल एक्सपो आयोजित किया गया। इसमें नामी-ग्रामी इंडस्ट्रीज के साथ ब्रह्माकुमारीज एनआईटी सेवाकेंद्र की ओर से बिजनेस इंडस्ट्री विंग का स्टॉल भी लगाया गया, जिसमें उद्यमियों को सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग जैसे स्ट्रेस मैनेजमेंट, टाइम मैनेजमेंट, हारमनी इन रिलेशनशिप, टीम बिल्डिंग, लीडरशिप के बारे में बताया गया। इसमें मोटिवेशनल स्पीकर बीके पूनम सहित अन्य भाई-बहनों ने अपनी सेवाएं दीं।

त्रिदिवसीय राजयोग शिविर संपन्न

शिव आमंत्रण, फर्रुखाबाद/उप्र। तीन दिवसीय राजयोग अनुभूति शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए बीके मंजू, सैनिक प्रकोष्ठ भाजपा के सह संयोजक वीरेन्द्र सिंह राठौर, वरिष्ठ आयकर अधिवक्ता सुरेश चन्द्र गोयल, विधायक सुशील कुमार शाक्य, पूर्व सांसद छोटे सिंह यादव, बीके रामनाभ भाई माउण्ट आबू तथा अन्य।

अपने पतित संकल्पों की बलि लेने वाली काली रूप बनो, तब कहेंगे पवित्र

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

विशेषता को जितना सेवा में लगाएंगे उतनी खुशी होगी

शिव आमंत्रण, आबू रोड। नेचर भी हरेक की कोई ना कोई उल्टी-सुल्टी होती है और एक विशेषता भी सभी में है। बाबा कहते हैं नौ लाख की माला में जो लास्ट वाला होगा, उसमें भी विशेषता जरूर होगी, नहीं तो भगवान आपको क्यों अपनाता! भगवान की परख रांग नहीं हो सकती है। बाबा ने आपको अपना बनाया और आपने कहा मैं बाबा का हूँ, मैं ब्रह्माकुमार हूँ। आपको बाबा ने अपनाया तो जरूर आपमें विशेषता है तभी बाबा ने आपको विशेष आत्मा बनाया। यह हो ही नहीं सकता है कोई भी ब्राह्मण आत्मा कहे कि मेरे में तो कोई विशेषता नहीं है। अपनी विशेषता आप खुद नहीं जानते हो, यह हो सकता है। अवगुण तो प्रसिद्ध हो जाता है। आप भले नहीं जानो लेकिन दूसरे को फील होता है फिर वह कहता है तो पता पड़ जाता है। बाबा ने हरेक की विशेषता को देख उस विशेषता को कार्य में लगवाया और उस विशेषता को कार्य में लगाने से वह और ही आगे बढ़ गया। तो अपने में जो विशेषता है उसको कार्य में लगाओ।

बाबा ने हर एक को कोई न कोई विशेषता दी है। बाबा की दी हुई विशेषता को मेरी विशेषता समझ करके अभिमान में नहीं आना है। कई कहते हैं मेरे में यह विशेषता है, मेरी विशेषता को क्यों नहीं जानते हैं, मेरी विशेषता को यूज करना चाहिए। मेरे-मेरे में आते हैं तो फिर वह विशेषता दब जाती है। ऊपर से मिट्टी आ जाती है। मेरापन आ गया तो वह काम में नहीं आती है। मेरी नहीं, यह प्रभु की देन है। प्रभु की देन को कभी भी अपना नहीं माना जाता है। बाबा की दी हुई विशेषता को जितना कार्य में लगाएंगे उतना खुशी होगी और शक्ति बढ़ती जाएगी।

दूसरी बात - बाबा कहता है कि निगेटिव नहीं देखो। लेकिन है ही निगेटिव तो निगेटिव दिखाई तो देगा, है ही बुरी चीज। फिर भी बाबा कहता है कि निगेटिव को भी पॉजीटिव में चैंज करो, यह हो सकता है ? जैसे गुलाब के फूल की पैदाइश खाद से होती है ऐसे बुराई से भी अच्छाई ले लो। जब हमारी क्रियेशन में इतनी शक्ति है तो हम गुलाब के फूल तो क्या सारे प्रकृति के रचयिता हैं, तो हमारे में यह ताकत नहीं है! कोई कहते हैं वह गाली दे रहा है तो मैं कैसे समझूं कि यह महिमा कर रहा है लेकिन बाबा कहता है निगेटिव को पॉजीटिव में चेंज करो। वह क्रोध कर रहा है, सारा ही झूठ बोल रहा है, तो कैसे चेंज करेंगे? कई कहते हैं वैसे मुझे क्रोध नहीं आता है लेकिन जब कोई झूठ बोलता है तो फिर मेरे को बहुत क्रोध आता है। फिर नहीं सहन हो सकता है। बाबा कहता है कोई झूठ बोलता है वह आपको बुरा लगता है, क्योंकि वह गलत है लेकिन उसके प्रति आपको क्रोध आया तो क्या यह किसी मुरली में श्रीमत है कि अगर कोई आपकी ग्लानि करे तो आप क्रोध करो! क्या यह राइट है? बंधा हुआ बंधे वाले को छुड़ा सकता है ?

देवी-देवता कभी किसी से कुछ मांगते नहीं हैं...

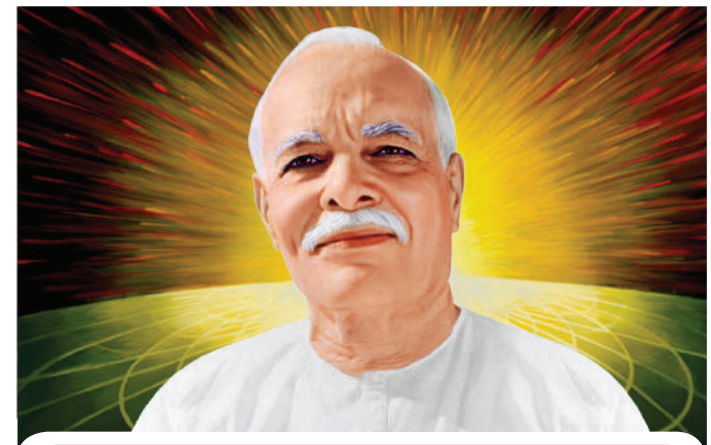

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

नेत्र वही थे, देखने वाला मन बदल गया

शिव आमंत्रण, आबू रोड। जिसे देखकर मन करता था कि वापस अपने ईश्वरीय कुल के शुद्ध वातावरण में लौट जाएं। जहां पर ऐसी अशुद्ध मन तरंगें नाम मात्र भी नहीं हैं। परन्तु सेवार्थ जाना ही था, इसलिए मजबूरी महसूस करते हुए रेलगाड़ी में हम सवार हो गए। रेल में लोगों की दृष्टि-वृत्ति, बोल-चाल, रहन-सहन देखकर ऐसा लगता था कि अब यह संसार बहुत ही बिगड़ गया है और मनुष्य बिल्कुल ही देह-अभिमानी बन गए हैं! तभी कवि का यह गीत स्मरण हो गया -

देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इन्सान कितना बदल गया इन्सान!
सूरज न बदला, चांद न बदला, न बदला रे आसमान, कितना बदल गया इन्सान!
छल और कपट के हाथों बेच रहा ईमान, कितना बदल गया इन्सान ! राम के भक्त रहीम के बन्दे, रखते आज फरेब के फन्दे। कितने ये मक्कार, ये अन्धे, देख लिये इनके भी धन्धे। इन्हीं की काली करतूतों से हुआ ये मुल्क मसान, कितना बदल गया इन्सान!
जो हम आपस में न झगड़ते, बने हुए क्यों खेल बिगड़ते। काहे लाखों ये घर उजड़ते, क्यों ये बच्चे माँ से बिछुड़ते। कितना बदल गया इन्सान! देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान्, कितना बदल गया इन्सान!

ब्रह्माकुमारी सीतू जी कहती हैं कि -

बहुत समय तक यज्ञ-कुंड में रहने के कारण हमें बाहर के संसार का कुछ भी पता न था, यहां तक कि हमें यह भी मालूम नहीं था कि अब सरकार का कौन-सा सिक्का चल रहा है। हम जब यज्ञ में रहती थीं तो हमने कभी हाथ में पैसा लिया न था क्योंकि हमें कोई सौदा तो खरीदना नहीं पड़ता था। हमें तो सबकुछ ईश्वरीय यज्ञ के भण्डार से ही बिन मांगे मिलता था। बाबा का यह आदेश था कि यज्ञ वत्सों को कभी भी कुछ मांगना न पड़े। बाबा कहा करते थे 'सतयुग में देवी-देवता कभी किसी से कुछ भी मांगते नहीं हैं। अतः अब जबकि यज्ञ-वत्स देवता बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं तो इन्हें भी कुछ मांगने की आवश्यकता नहीं रहनी चाहिए।' अहो, प्रभु द्वारा पालन की उस अनोखी रीति का हम कैसे वर्णन करें! उस अलबेले, फिक्र से फारिग जीवन की घड़ियां तो अत्यन्त सुखमय थीं, तभी तो कहा गया है कि 'तुम माता-पिता हम बालक तेरे, तुम्हारी कृपा से सुख घनेरे'।

मैं यह बता रही थी कि हमें संसार के सिक्कों का भी कुछ पता नहीं था। हमारी दुनिया ही एक न्यारी और प्यारी, एक ईश्वरीय दुनिया थी। यदि कोई नया व्यक्ति वहां आकर रहता तो वह समझ सकता था कि सचमुच भोलानाथ शिव एक नई, सरल स्वभाव वाली, पवित्र पुष्पों वाली, प्यारी सृष्टि की रचना कर रहे हैं।

मुझे याद हैं कि एक बार जब हमारी दो दैवी बहने ईश्वरीय सेवा के लिए कहीं गयी थीं, तो एक छोटी-सी समस्या उनके सामने आई थी। उन्हें एक ताँगे वाले को अठन्नी देनी थी और वे यह निर्णय नहीं कर पा रही थीं कि तांगे वाले को कौन-सा सिक्का दिया जाए। बात यह थी कि उन दिनों एक नया रुपया निकला था और एक अठन्नी का सिक्का पहले से चल रहा था और दोनों का घेरा लगभग बराबर था।

उन्होंने दोनों सिक्कों को एक दूसरे के ऊपर रख कर देखा और जो सिक्का उन्होंने घेरे में छोटा पाया उसे उन्होंने अठन्नी मान कर ताँगे वाले को दे दिया क्योंकि वे दोनों बहनें पढ़ी-लिखी तो थीं नहीं। परन्तु वे अपने लिए यह सौभाग्य की बात मानती थीं कि वे केवल ईश्वरीय विद्या ही पढ़ी थीं और उन्होंने उस कलियुगी नारकीय संसार की छी-छी बातें न पढ़ी थीं, न सुनी थीं। हाँ, बाद में उन्होंने थोड़ा-सा अक्षर ज्ञान भी ले लिया ताकि वे लेन-देन भी कर सकें। **क्रमशः**

गंभीरता का गुण सर्वगुणों की खान है, रमणीकता भी हो

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

शिव आमंत्रण, आबू रोड। मम्मा-बाबा को देख करके हम अपने लिए नियम बनाकर रखें, मुझे उस नियम अनुसार चलना है। कभी मम्मा-बाबा ने किसकी गलती किसी को सुनाई नहीं होगी। समा लिया है, बहुत अच्छी तरह से जैसे हैं वैसे हैं। अन्दर से आता है बाबा के हैं। बाबा भी कहता है जैसे हैं वैसे बच्चे मेरे हैं। सच्चा स्नेह और सच्चाई क्या होती है उसको अच्छी तरह से समझना और अपने को उसमें फुल करना यह भी बड़ा सम्पत्तिवान बनना है। सच्चाई की शक्ति, ईश्वरीय स्नेह की शक्ति सारे विश्व सेवा में काम आ रही है। ईश्वरीय परिवार के अन्दर यूनिटी और स्नेह जितना बढ़ता जाए उतना शोभा है। हमें स्वयं स्वमान में रहने के लिए भी बहुत ध्यान रखना है। ऐसे नहीं मेरा मान कम न हो जाए। यह ख्याल नहीं करना है। जितना स्वमान में रहेंगे और बाबा की बात को दिल से मानने, करने के लिए आत्मा सदा रेडी रहे। उसके सिवाए और कुछ करने और सोचने का सोच भी नहीं चल सकता है, कर भी नहीं सकते हैं। अपने को ऐसे ईश्वरीय कायदों के बंधन में बांधकर रखना माना सब प्रकार की जो भी सूक्ष्म रस्सियाँ हैं उससे मुक्त होना। गंभीरता का गुण सर्वगुणों की खान है। गम्भीरता के साथ रमणीकता भी हो।

बाबा के मीठे बोल अति प्यारे लगते हैं क्योंकि हमारे जीवन को परिवर्तन करने में शक्ति देने वाले बोल हैं। बाबा की मुरली सुनते सदा अपने आपको देखो - मैं कौन हूं? वाह रे मैं! वाह ड्रामा! वाह बाबा! तो कितना परिवर्तन आ जाता है। वाह रे मैं माना अभिमान चला गया, सर्व आत्माओं में से बाबा ने हमको श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा बना लिया। इसलिए कहते हैं-वाह रे मैं! अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख दिन प्रतिदिन भाग्य की रेखा बड़ी लम्बी खींचते चलो। जितना चाहे खींच लो। भाग्यविधाता बाबा है इसलिए इजी हो गया है क्योंकि उसके बच्चे हैं! सीख जाते हैं उनसे कैसे भाग्य बनाएं, इसलिए ब्रह्मा बाबा को भागीरथ कहते हैं।

भक्तिमार्ग में भागीरथ की बहुत मान्यता है। तो ड्रामानुसार यह भी हमारा भाग्य है कि बाप के मस्तक पर बैठ हम ज्ञान गंगा बने हैं। बाबा कहां से उठाकर कहां बिठाता है, जिस बाप का बच्चे से बहुत प्यार होता है या जो बच्चा बहुत लाडला होता है तो उस बच्चे को कंधे पर उठा लेते हैं। और यहां तो बाबा हम सबको सिर पर उठाकर सिर का ताज बना देता है। तो हम बाप के सिर का ताज हो गए, तब ही तो हम बाबा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

गीता ज्ञान दाता ने ज्ञान सुनते, ब्रह्मा मुख से महावाक्य सुनते ब्राह्मण लाइफ बनाई है। अपने आप सिद्ध हो रहा है जो गीता भक्तिमार्ग में गाई हुई है, अब वहीं गीता ज्ञान दाता सन्मुख हम बच्चों को सुना रहा है। गीता किसने किसको सुनाई - यह अभी स्वतः सिद्ध हो रहा है। ज्ञान जो बाप ने दिया है, वह है योगी बनने के लिए, दैवीगुण धारण करने के लिए। ज्ञान है कि कैसे पवित्र बनो, योगी बनो। हमारा स्लोगन भी है - बी होली, बी योगी। फर्स्ट बी होली। सोल कॉन्शेसनेस रहने से पवित्र बनते जाते हैं। अपवित्रता से नैन-चैन, बोल-चाल बदल जाते हैं। यहीं तो बाबा ने ज्ञान अर्थात् समझ दी है और साथ-साथ किसके बच्चे हैं तो संस्कार बदल जाते हैं।

पवित्रता-अपवित्रता में अंतर जानना जरूरी:
पवित्रता और अपवित्रता में क्या अन्तर है इसको जानने से 'बी होली' बनना इजी हो जाता है। ज्ञान से बुद्धि को यह समझ आई, रियलाइजेशन हुआ कि परिवर्तन होना आवश्यक है और होने की यह घड़ी है। श्रेष्ठ जीवन जीने का भाग्य मिल रहा है। काम वाली जीवन जीने का कोई मतलब ही नहीं है। उससे हम छुटकारा पा लेते हैं, जैसे बन्धन छूट जाते हैं वह खींचते नहीं हैं। निश्चय का बल विजय बना रहा है। अनुभव होता जा रहा है, यह भी समझ से निश्चय हुआ। जिसका जिस घड़ी निश्चय हिलता है या कोई प्रकार का डाउट होता है तो सीधा कहेंगे - कोई समझ की कमी है। ठीक तरह से समझ काम नहीं करती है तो खुद में, बाप में या ईश्वरीय परिवार में या किसी में भी कोई सूक्ष्म डाउट उठता है और जिस घड़ी कोई डाउट ही नहीं है, कुछ क्वेश्चन नहीं तो वन्डर है जो भी सीन सामने है अच्छी लगती है। भगवान ने हमें बहुत अच्छी समझ दी है कि मेरा हर एक बच्चा समझदार बने।

खुशनुमा जीवन जीने के बताए राज

» शिव आमंत्रण, फतेहाबाद/हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की ओर से खुशनुमा जीवन जीने की कला विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। गुरुग्राम से पधारीं अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने खुशनुमा जीवन के राज बताए। कार्यक्रम में शहर के दो हजार से अधिक गणमान्य व्यक्तियों ने हिस्सा लिया। शहर की प्रमुख संस्थाओं ने जिनमें एमएम कॉलेज ऑफ मैनेजमेन्ट, इंडियन मेडिकल काउंसिल, लायन्स क्लब, नगर परिषद, पंजाबी खत्री सभा की ओर से बीके शिवानी दीदी का सम्मान किया गया। इसमें पंजाब जोन की इंचार्ज बीके प्रेम भी उपस्थित थीं।

सेवा भावना से जीवन में संतुष्टता व सरलता आती है

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन में संस्थान के महासचिव राजयोगी बीके निर्वैर का 84वां जन्मदिन मनाया गया। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी ने कहा कि आपका दैवी तुल्य जीवन मानवता की सेवा में समर्पित है। सेवा भावना से जीवन में संतुष्टता और सरलता आती है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके मोहिनी, बीके जयंती, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके लक्ष्मी, अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, मीडिया निदेशक बीके करुणा, बीके मृत्युंजय ने भी शुभकामनाएं दीं।

दुर्घटना में मृत लोगों की याद में विश्व यादगार दिवस मनाया

» शिव आमंत्रण, गुरूग्राम (हरियाणा)। ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर पर सड़क दुर्घटना में मृत लोगों की याद में विश्व यादगार दिवस मनाया गया। उद्घाटन इण्डियन एसोसिएशन ऑफ ट्रेवल टूरिज्म के राष्ट्रीय सलाहकार सुभाष वर्मा, मारूति सुजुकी के वाइस प्रेसिडेण्ट सलील लाल, राईट्स के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर वेद प्रकाश, सुनील बाल्यान, मालावी के डिप्टी हाई कमिश्नर ग्रेस गुप्ता सहित बीके शुक्ला व अन्य मौजूद रहे।

भय और नकारात्मक विचार हमारे अमृत समान संकल्पों को दूषित कर देते हैं

» शिव आमंत्रण, आलीराजपुर/मप्र। हमारे कर्म ही पाप और पुण्य का रूप लेकर अच्छे और बुरे वक्त का निर्माण करते हैं। बुरे समय में हमारे पुण्य कर्म ही काम आते हैं। स्वयं एवं सर्व प्रति, निःस्वार्थ और कल्याण की भावना से पुण्य जमा होता है। जैसे अमृत में ज़हर की एक बूंद, उसे ज़हर में परिवर्तित कर देती है। ठीक इस ही तरह हमारे मन में उठते विचार अर्थात् हमारे संकल्प, वह भी अमृत के समान ही हैं। परंतु किसी भी प्रकार का भय या फिर कोई भी नकारात्मकता वह ज़हर है जो कि अमृत समान हमारे संकल्पों को दूषित कर देते हैं। सुकून (शान्ति) जो है, वो न्यारा पन से ही मिलता है। संकल्पों से न्यारा होना अर्थात् जो भी संकल्प हमें भारी करे, उदासी लाए, भय, चिन्ता में लाए, हमारी खुशी को खत्म करे, उन्हें हर बार परमात्मा को समर्पण करना होगा। इसी प्रकार भय हर बीमारी की जड़ है।

यह विचार इंदौर से पधारे बीके नारायण ने मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों से आए हुए इंडक्शन ट्रेनिंग कोर्स के कॉन्स्टेबल्स को जीवन जीने की कला विषय पर संबोधित करते हुए व्यक्त किए। एक साधारण मनुष्य भी यदि मन पर नियंत्रण करके उसे परमात्मा पिता में एकाग्र कर ले तो वह देव समान बन सकता है और उसके लिये सफलता को पाना बेहद आसान हो जाता है। इसलिए परमपिता परमात्मा को अपनी आखिरी उम्मीद नहीं परंतु पहला भरोसा बनाइए। बीके प्रतिभा ने बतलाया की यदि इंसान अपने दृष्टिकोण को बदल ले तो सब कुछ अच्छा और सुन्दर नजर आएगा। ट्रेनर सीताराम, अमर सिंह ने अपने अनुभव भी सुनाए।

राष्ट्रीय पत्रकारिता दिवस पर पत्रकारों का किया सम्मान

» शिव आमंत्रण, गंज बासौदा (मप्र)। राष्ट्रीय पत्रकारिता दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके रेखा और बीके रुकमणी ने नगर के वरिष्ठ पत्रकार सत्यनारायण शर्मा, सुरेश कुमार तलवानी, ओम प्रकाश चौरसिया सहित अनेक पत्रकार बंधुओं का सम्मान किया। इस दौरान मौजूद सभी मीडिया कर्मियों को जीवन में आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन को अपनाने की सलाह दी। साथ ही संस्थान के मीडिया विंग द्वारा की जा रही सेवाएं की जानकारी दी।

राजयोग मेडिटेशन से आएगी विचारों में श्रेष्ठता: बीके शिवानी

» शिव आमंत्रण, सिरसा (हरियाणा)। नारी शक्ति अवार्ड से सम्मानित, अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक प्रवक्ता बीके शिवानी के सिरसा में प्रथम आगमन पर दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके शिवानी ने विचारों को शुद्ध और श्रेष्ठ बनाने पर जोर देते हुए कहा कि हमारे विचारों का जीवन में बहुत महत्व है। विचारों में श्रेष्ठता राजयोग मेडिटेशन से आएगी। सोचने के पहले भी सोचें कि मेरे विचार क्या हों। मुझे क्या विचार करना है, क्या नहीं करना है। विचार ही शक्ति हैं। विचारों से ही जीवन बनता है। मैजिकल पावर ऑफ थॉट्स विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सांसद सुनीता गुप्ता, कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, उपायुक्त पार्थ गुप्ता, पुलिस अधीक्षक अर्पित जैन, म्यूनिसिपल कमिश्नर किरन सिंह, एडिशनल डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज सुमित गर्ग, ज्यूडिशियल मैजिस्ट्रेट विशाल शियोकन्द, प्रदेश व्यापार मण्डल के स्टेट सेक्रेटरी सुधीर ललित सहित प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के वरिष्ठ पत्रकारों सहित हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए। इस विशाल आयोजन में तीन अलग-अलग सत्रों में शिवानी दीदी ने विशाल जनसमूह को संबोधित किया।

संपादकीय

नयी सोच के साथ छोड दें दु:खी करने वाली पुरानी यादें

कोरोना काल के बाद 2022 का साल उम्मीदों और जीवन में खुशियां लाने वाला रहा। हर किसी ने राहत की सांस ली और अपने आजीविका में लग गये। परन्तु बीता हुआ साल कई मायनों में कई सीख दे गया। हमें बीते हुए कल से सीखना है। आने वाले कल का स्वागत करना है। जो बीते कल में खट्टी मीठीं यादें रही उसे भूल अपने अर्थव्यवस्था, अपनी दिनचर्या, मन के सशक्तिकरण के लिए अच्छे विचारों को आत्मसात करने की भी प्रक्रिया अपनाने का प्रोग्राम बनायें। दिल खोलकर बीतने वाले वर्ष को विदायी दें। साथ ही आने वाले नये साल का भरपूर आनन्द लेते हुए स्वागत करें। संकल्पों में दृढ़ करें कि चाहे कुछ भी हो जाये, हम अपने मन को डिस्टर्ब और खराब नहीं होने देंगे। हर किसी को सुख देंगे, अपने पराये के भेद को मिटायेंगे। फिर देखिये अपने आप आपका आने वाला कल ठीक होने लगेगा। यही सही प्रबन्धन होगा और नये साल का आगाज भी। प्रतिदिन यह तय करें कि हम जल्दी सोयेंगे और जल्दी उठेंगे। मेडिटेशन के साथ शरीर को स्वस्थ रखते हुए खुद के आन्तरिक तरक्की के लिए समय निकालेंगे। प्रतिदिन हम अपना आंकलन करेंगे कि हमसे किसी को दु:ख ना पहुंचे। राजयोग ध्यान को जीवन का हिस्सा बनाने से हमारी अधिकतर समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाता है। यही नये साल का आगाज होगा।

बोध कथा/जीवन की सीख

पुण्य और कर्तव्य

एक पुण्यशाली व्यक्ति परिवार सहित तीर्थ यात्रा पर निकला। कई कोस दूर जाने के बाद सभी को प्यास लगने लगी, ज्येष्ठ का महीना था, आसपास कहीं पानी नहीं दिखाई पड़ रहा था। बच्चे प्यास से व्याकुल होने लगे। समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या करे... साथ में जो पानी था वह भी समाप्त हो चुका था। एक समय ऐसा आया कि उसे भगवान से प्रार्थना करनी पड़ी कि हे प्रभु! अब आप ही कृपा करो मालिक... इतने में उसे दूर पर एक साधु तप करता हुआ नजर आया। व्यक्ति ने उस साधु से जाकर अपनी समस्या बताई। साधु बोले कि-एक कोस दूर उत्तर की दिशा में एक छोटी दरिया बहती है, जाओ जाकर वहां से पानी की प्यास बुझा लो। साधु की बात सुनकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और उसने साधु को धन्यवाद बोला। पत्नी एवं बच्चों की स्थिति नाजुक होने के कारण वहीं रुकने के लिए बोला और खुद पानी लेने चला गया। जब वो दरिया से पानी लेकर लौट रहा था तो उसे रास्ते में पांच व्यक्ति मिले जो अत्यंत प्यासे थे। पुण्य आत्मा को उन पांचों व्यक्तियों की प्यास देखी नहीं गई और अपना सारा पानी उन प्यासों को पिला दिया। जब वो दोबारा पानी लेकर आ रहा था तो पांच अन्य व्यक्ति मिले जो उसी तरह प्यासे थे। पुण्य आत्मा ने फिर अपना सारा पानी उनको पिला दिया। यही घटना बार-बार हो रही थी और काफी समय बीत जाने के बाद जब वो नहीं आया तो साधु उसकी तरफ चल पड़ा... बार-बार उसके इस पुण्य कार्य को देखकर साधु बोला - हे पुण्य आत्मा तुम बार-बार अपनी बाल्टी भरकर दरिया से लाते हो और किसी प्यासे के लिए खाली कर देते हो। इससे तुम्हें क्या लाभ मिला..? पुण्य आत्मा ने बोला मुझे क्या मिला? या क्या नहीं मिला इसके बारे में मैंने कभी नहीं सोचा। पर मैंने अपना स्वार्थ छोड़कर अपना धर्म निभाया। साधु बोले-ऐसे धर्म निभाने से क्या फ़ायदा जब तुम्हारे अपने बच्चे और परिवार ही जीवित ना बचे? तुम अपना धर्म ऐसे भी निभा सकते थे जैसे मैंने निभाया। पुण्य आत्मा ने पूछा-कैसे महाराज? साधु बोले- मैंने तुम्हें दरिया से पानी लाकर देने के बजाय दरिया का रास्ता ही बता दिया। तुम्हें भी उन सभी प्यासों को दरिया का रास्ता बता देना चाहिए था, ताकि तुम्हारी भी प्यास मिट जाए और अन्य प्यासे लोगों की भी... फिर किसी को अपनी बाल्टी ख़ाली करने की जरूरत ही नहीं... इतना कहकर साधु अंर्तध्यान हो गए। पुण्य आत्मा को सब कुछ समझ आ गया कि अपना पुण्य खाली कर दूसरों को देने के बजाय, दूसरों को भी पुण्य अर्जित करने का रास्ता या विधि बताएं।

संदेश: अगर किसी के बारे में अच्छा सोचना है तो उसे परमात्मा से जोड़ दें ताकि उसे हमेशा के लिए लाभ मिलता रहे।

मेरी कलम से...

महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज, श्री पंचायती उदासीन नया अखाड़ा, पटौदी

यहां से गीता का पैगाम विश्व के कोने-कोने में पहुंचाया जा रहा है

अपना मन काबू कर लोग आबू के बाबू के काबू में हो जाएं तो दुनिया जन्नत बन जाएगी

शिव आमंत्रण, आबू रोड। अपने आराध्य गुरुजनों का सिमरन करते हुए यह ब्रह्माकुमारीज़ की पवित्र भूमि, पुण्यभूमि, आध्यात्मिक भूमि, जीवन निर्माण की भूमि, इस धरती पर उतरी हुई स्वर्ग की भूमि, वैकुंठ की भूमि, इस भूमि को मैं बारंबार प्रणाम करता हूं कि जहां पर वो दिव्य महामानव अनेक हीरों की पहचान करने वाला वो दिव्य इंसान, जिन्हों को हीरो की परख थी, बाबा ब्रह्मा के नाम से वो जाने जाते हैं। लेखराज जी हीरों को तराश सकते थे और पहचान सकते थे, उन्होंने यह पहचाना कि मानव सृष्टि में बहुत सारे आत्मा रूपी हीरे छिपे हुए हैं। मानव सृष्टि में बहुत सारे हीरे आज राजयोगी और राजयोगिनी कहलाती हैं जो ये सारे यहां हीरे हैं। इन चैतन्य हीरों को परखने वाले, तराशने वाले, पत्थर को हीरे का रूप देने वाले ब्रह्मा बाबा, आपके माध्यम से इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में दूर-दूर से रोजाना आते हुए संत-महात्मा द्वारा सच्ची गीता का पैगाम भारत के कोने कोने में और समुद्र पार भी पहुंचाया जा रहा है। स्वर्णिम भारत की ओर बढ़ने वाला हमारा कदम ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों पर पिछले 15 वर्षों में अनेक बार मैं भारत के अनेक सेवाकेंद्रों के कार्यक्रमों में गया, लेकिन इस भूमि को आज तीसरी बार प्रणाम करने का अवसर मिला।

मुझे लगता है यहां पर तो स्वर्णिम युग का प्रारंभ हो चुका है। निश्चित रूप से, बस एक चीज अगर हो जाए कि दुनिया के अधिकतर लोग मन काबू कर आबू के बाबू के काबू में आ जाएं तो सारी धरती जन्नत बन जाएगी।

यहां के ज्ञान माध्यम से सारा विश्व जगमगाएगा, आसमान पर इतने तारे नहीं होंगे जितने धरती पर जगमगाएंगे। बस अपने मन को काबू में लाने की आवश्यकता है। हमारे ब्रह्मा बाबा और उनकी सेना सारी तैयार है, इस धरती को जन्नत बनाने के लिए।

'भारतीय ज्ञान परंपरा के विहंगम आध्यात्मिक परिदृश्य'

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 54

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

'मनुष्य जन्म की प्राप्ति के पश्चात सनातन धर्म की सभ्यता एवं संस्कृति का समग्र परिदृश्य 'बड़े भाग्य मानुष तन पावा' की उच्चता के सानिध्य में गतिशील जीवन की महानता को प्राप्त करने हेतु अव्यक्त स्वरूप में पवित्र आचरण द्वारा उदाहरणमूर्त चेतनता के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो सर्वगुण–संपन्नता के फरिश्ता स्वरूप से साक्षात्कार मूर्त चेतनता की संपूर्णता को सदा ही आत्मिक समृद्धि के स्वरूप में प्रकट करता रहता है।

आत्मिक आश्रय से मौन साधना

आध्यात्मिक अनुसंधान में सत्यदर्शन का रहस्योद्घाटन प्रामाणिक स्वरूप से होने के कारण, साधना के पथ पर गतिशील साधक के लिए – आत्मानंद के सानिध्य में परिष्कृत आत्मचिंतन द्वारा उत्कृष्ट अवस्था की प्राप्ति का विशिष्ट रूप से प्रेरणादाई आधार बनता है जिससे आत्मिक आश्रय से मौन साधना का मार्ग स्व में वहीं प्रशस्त होता है। आध्यात्मिक परिदृश्य की समग्रता में आत्मिक अध्ययन एवं पुरुषार्थ अनुसंधान की व्यापक परिधि, शैक्षणिक प्रशिक्षण द्वारा आत्मदर्शन को सुनिश्चित कर देती है जिससे पारदर्शी जीवन तथा यथार्थवादी स्वरूप का सामाजिक परिदृश्य मंगलकारी रूप में प्रखरता से मुखरित हो जाता है।

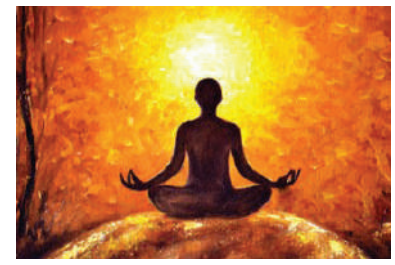

धर्मगत आचरण की कर्मगत शुचिता

स्वयं को सदा निमित्त, निर्माण और निर्मल स्वरूप में स्थापित करते हुए – लौकिक, अलौकिक एवं पारलौकिक सत्ता के प्रति श्रद्धा, आस्था तथा मान्यता के साथ उपदेश के अनुपालन में आज्ञाकारिता एवं धर्मगत आदेश को आत्मसात करके ईश्वरीतत्व बोध तथा निजी अस्तित्व की स्वीकारोक्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है। जीवन में उच्चतम स्थितियों से महानतम अवस्था की प्राप्ति धर्मगत आचरण की कर्मगत शुचिता से ही निर्धारित होती है। जिसके परिष्कार हेतु महान जीवन की स्थापना एवं पवित्र आत्मिक स्वरूप को स्थाई रूप से साधने के लिए आध्यात्मिक परिदृश्य में उपरामस्थिति से कर्मातीत अवस्था तथा अव्यक्त स्वरूप के फलितार्थ द्वारा सुनिश्चित होताहै।

मूल्यपरक जीवन में व्यवहारगत सिद्धांत

मूल्यगत आचरण के आचार्य की धारणात्मक श्रेष्ठता के प्रति श्रद्धा, आस्था एवं मान्यता की नैसर्गिक पक्षधरता सदा मानव जाति को 'मातृदेवोभव, पितृदेवोभव, आचार्य देवोभव, सत्यंवद, एवं धर्मंचर...'के मार्ग पर गतिशील बने रहने के लिए प्रेरित करती है जिसमें मूल्य परक जीवन में व्यवहारगत सिद्धांत से मर्यादित आचरण का नैतिक संबल अंतर्मन को 'चरैवेति..चरैवेति' के नैसर्गिक व्यवहार को आत्म सात करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है जिससे आध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा शैक्षणिक क्रिया विधि के अंतर्गत प्रशिक्षण से आत्मिक अध्ययन का विराट अनुष्ठान आत्मिक अनुकरण और अनुसरण का महत्वपूर्ण स्रोत बन जाता है।

पवित्र आचरण द्वारा उदाहरणमूर्त चेतनता

श्रेष्ठतम गति, मति और सुमति के माध्यम से आत्मिक पवित्रता के प्रकंपन को चहुं दिशाओं अर्थात संपूर्ण आभा मंडल को खुशबूदार बनाते हुए मानवतावादी चिंतन में अंतर्मन द्वारा 'सर्वे भवंतु सुखिनः' की व्यापकता को स्वीकार करके आध्यात्मवादी चैतन्यता की भावनात्मक सृष्टि से 'वसुधैव कुटुंबकम' की विराट उच्चता पर आत्म तत्व को चेतना के उच्च दर्शन से पुर्नस्थापित किया जा सकता है। मनुष्य जन्म की प्राप्ति के पश्चात सनातन धर्म की सभ्यता एवं संस्कृति का समग्र परिदृश्य 'बड़े भाग्य मानुष तन पावा' की उच्चता के सानिध्य में गतिशील जीवन की महानता को प्राप्त करने हेतु अव्यक्त स्वरूप में पवित्र आचरण द्वारा उदाहरणमूर्त चेतनता के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो सर्वगुण-संपन्नता के फरिश्ता स्वरूप से साक्षात्कार मूर्त चेतनता की संपूर्णता को सदा ही आत्मिक समृद्धि के स्वरूप में प्रकट करता रहता है।

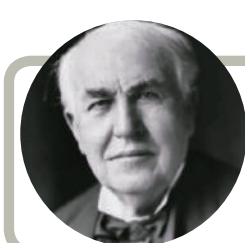

कई ऐसे असफल लोग, जिन्हें कुछ अहसास ही नहीं होता, जब वे हारे, तब सफलता के कितने करीब थे।

- थॉमस ए. एडिसन

अपने सपनों की दिशा में आत्मविश्वास से आगे बढ़ें! वह जीवन जीएं जिसकी आपने कल्पना की है।

- हेनरी डेविड थॉरो

स्वदेशी मेला] केंद्रीय राज्यमंत्री ने किया ब्रह्माकुमारीज़ के स्टॉल का उद्घाटन

35 हजार लोगों को दिया नशामुक्ति का संदेश

» शिव आमंत्रण, बिलासपुर/छग। छत्तीसगढ़ साइंस कॉलेज मैदान में आयोजित सात दिवसीय स्वदेशी मेला, आत्मनिर्भरता की एक झलक में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मेरा बिलासपुर दुर्घटना रहित बिलासपुर एवं मेरा बिलासपुर व्यसन मुक्त बिलासपुर के तहत संयुक्त स्टॉल के द्वारा जागरूकता अभियान चलाया गया।

ब्रह्माकुमारीज स्टॉल का उद्घाटन केंद्रीय पेट्रोलियम राज्यमंत्री रामेश्वर तेली ने किया। उन्होंने कहा कि युवाओं में बढ़ते नशे की आदत चिंता का विषय है। अब इसके प्रति सभी को जागरूक करना आवश्यक है। व्यसनों की मुक्ति के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और दृढ़ संकल्प की जरूरत होती है। ब्रह्माकुमारीज़ यह कार्य बहुत अच्छी तरीके से कर रही हैं।

सांसद एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि समाज को नशे से छुड़ाने के लिए हर प्रकार की मुहिम चलानी होगी, तभी जाकर हमारा देश नशा मुक्त देश बन पाएगा। बिलासपुर रेंज के आईजी रतन लाल डांगी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ पूरे विश्व में मूल्यनिष्ठ समाज की पुनर्स्थापना का सराहनीय कार्य कर रही है। पूर्व मंत्री एवं विधायक डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में मन के आंतरिक नियंत्रण के साथ बाह्य परिस्थितियों को भी नियंत्रित करना सिखाया जाता है। नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल, पूर्व मंत्री रामविचार नेताम, रेलवे जोन के वरिष्ठ अधिकारी नवीन कुमार, बिलासपुर के पूर्व सांसद लखनलाल साहू, विधायक रजनीश सिंह, भारतीय जनता पार्टी संगठन मंत्री पवन साय, वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ एवं विनायक नेत्रालय के संचालक डॉ. ललित मखीजा, स्वदेशी मेला के पदाधिकारी आदि ने भी मेरा बिलासपुर दुर्घटना रहित बिलासपुर एवं मेरा बिलासपुर व्यसन मुक्त बिलासपुर के संयुक्त स्टॉल का अवलोकन किया। ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय शाखा राजयोग भवन की संचालिका बीके स्वाति ने कहा कि सड़क सुरक्षा एवं व्यसन से होने वाले नुकसान के प्रति जागृति, अपने परिवार, समाज और सड़क सुरक्षा के प्रति जिम्मेवारी का बोध कराना तथा आध्यात्मिकता द्वारा मूल्यनिष्ठ जीवन बनाना ही इस स्टॉल का मुख्य उद्देश्य है। लगभग 35000 लोगों ने स्टॉल का अवलोकन किया।

जीवन को खुशी से जीने, सुखी बनाने के टिप्स दिए

» शिव आमंत्रण, हांसी (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के शांति सरोवर सभागार में स्वस्थ और सुखी जीवन विषय पर आयोजित कार्यक्रम में बीके शिवानी दीदी ने जीवन को खुशी से जीने और सुखी बनाने के टिप्स बताए। उन्होंने कहा कि जैसा हम सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं। हमारी सोच ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करती है। आज हम जो हैं, जैसे हैं और जहां हैं अपनी सोच के ही कारण हैं। जीवन की आज जो हमारी क्वालिटी है, उसमें हमारे थॉट्स का अहम किरदार है। कार्यक्रम में सभी ने आध्यात्मिक शिक्षा को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प किया। इस दौरान विधायक विनोद भयाना, पार्षद, न्यायिक अधिकारी, सिविल जज (सीनियर डिवीज़न) संजीव काजला, एडिशनल सिविल जज निधि सोलंकी, ज्यूडिशयल मजिस्ट्रेट सुश्री ज्योति, एसडीएम डॉ. जितेंद्र अहलावत आदि ने हिस्सा लिया। शुभारम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

अपने आचरण से दें बच्चों को शिक्षा

» शिव आमंत्रण, भिलाई (छग)। ब्रह्माकुमारीज़ के सेक्टर-7 भिलाई स्थित अंतर्दिशा भवन में क्रिएटिंग ग्रेटनेस विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें दुर्ग जिले के सभी स्कूलों के प्राचार्य एवं शिक्षकों ने भाग लिया। मोटिवेशनल स्पीकर बीके प्राची ने कहा कि वर्तमान समय की यह आवश्यकता है कि हमारे व्यक्तित्व से महानता की लहर फैले? किताबी ज्ञान देने के साथ-साथ हमारे आचरण और हर कर्म से बच्चों को शिक्षा देना ही क्रिएटिंग ग्रेटनेस है।

डीईओ अमित घोष ने कहा कि हम सभी चाहे घर में रहें या कार्यक्षेत्र में रहें अपने बच्चों से या अपने घर वालों और अपने काम से तनाव का अनुभव करते ही हैं। तनाव को खत्म करने की ब्रह्माकुमारीज़ से अच्छी जगह है। संचालन बीके रिया ने किया। अंत में शुभ आशा व्यक्त करते हुए संस्था से पॉजिटिव एनर्जी लेकर जाने की अपील की।

'हम शिक्षा में मातृभाषा पर जोर दे रहे'

» शिव आमंत्रण, कटक (ओडिशा)। ब्रह्माकुमारीज़ ओडिशा राज्य में अपनी सेवाओं की स्वर्ण जयंती मना रहा है। राज्य में पहला सेवाकेंद्र वर्ष 1973 में कटक में राजयोगिनी बीके कमलेश द्वारा खोला गया था। कार्यक्रम में केंद्रीय शिक्षा और कौशल विकास मंत्री धर्मेंद्र कुमार प्रधान ने कहा कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को भी इस महान आध्यात्मिक संस्था की शिक्षाओं से पर्याप्त लाभ मिला है। शिक्षा में प्रतिस्पर्धा केवल प्राप्त अंकों के आधार पर नहीं होनी चाहिए। पाठों को आसानी से छात्रों को समझने में आसानी हो इसलिए भारत सरकार उसे मातृभाषा के माध्यम से सीखने पर जोर देते हुए नई शिक्षा नीति ला रही है जिसे ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पहले ही लागू किया जा चुका है। इस मौके पर उड़ीसा की सब जोन प्रभारी बीके कमलेश, अतिरिक्त प्रभारी बीके सुलोचना सहित अन्य वरिष्ठ भाई एवं वरिष्ठ पत्रकार सहित बड़ी संख्या नागरिकगण मौजूद थे।

डॉ. बीके सुनीता को मोटिवेशनल अवार्ड

» शिव आमंत्रण, पंचकूला (हरियाणा)। ऑल इंडिया लाइनेस क्लब द्वारा शांतिवन की डॉ. बीके सुनीता को पंचकूला, हरियाणा में आयोजित बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष लायनेस अर्चना अग्रवाल और अन्य सदस्यों ने उनके शिवशक्ति लीडरशिप इनिशिएटिव और प्रेरणादायी फोकल प्वाइंट पर्सन होने के नाते मोटिवेशनल अवार्ड से सम्मानित किया।

आध्यात्मिकता से जुड़कर ही हम दैवी गुणों को जागृत कर सकते हैं: बीके रुक्मिणी

» शिव आमंत्रण, सादाबाद (उप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ शिव शक्ति भवन में दया और करुणा विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें माउंट आबू से बीके रुक्मिणी एवं गीतकार बीके रमेश, फर्रूखाबाद से बीके शोभा, हाथरस से बीके सीता आदि उपस्थित रहे। बीके रुक्मिणी ने कहा कि दया धर्म का मूल है और अहंकार अधर्म की जड़ है। आध्यात्मिकता से जुड़कर ही हम अपने में दैवी गुणों को जागृत कर सकते हैं। परमात्मा दया और करुणा के सागर कहलाते हैं। उनसे हम अपने में इतनी दया और करुणा भर सकते हैं कि हर एक के लिए हमारे मन में शुद्ध भावना पैदा हो जाए। गायक बीके रमेश ने अपने अलौकिक रूहानी गीत मेरे संग-संग चलते है बाबा... समां बांध दिया। बीके शोभा, हाथरस जनपद प्रभारी बीके सीता, गिरीराज किशोर शर्मा, शम्भू दयाल, समाजसेवी गीता गौड़ ने भी संबोधित किया। संचालन बीके भावना ने किया।

जयपुर] राज्यपाल ने पीस पैलेस भवन को समाज के लिए समर्पित किया

मानसिक प्रदूषण समाप्त करने के लिए राजयोग मेडिटेशन जरूरी: राज्यपाल कलराज मिश्र

» शिव आमंत्रण, जयपुर (राजस्थान)। मानसिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए राजयोग मेडिटेशन आवश्यक है। स्वस्थ जीवनशैली के लिए मानसिक प्रदूषण से मुक्ति जरूरी है। पीस पैलेस भवन समाज में शांति, प्रेम, पवित्रता और सद्भावना की स्थापना में अहम भूमिका निभाएगा। यहाँ से जन-जन को जीवन और विचारों में बदलाव लाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा मिलेगी।

उक्त उद्गार राज्यपाल कलराज मिश्र ने ब्रह्माकुमारीज के मुरलीपुरा स्थित पीस पैलेस में ओम शांति मेडिटेशन सेंटर का उदघाटन करते हुए व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यहाँ आकर पहली बार थॉट्स लैब के बारे में पता चला। मन में एक साथ कई विचार आते हैं, कभी सौहार्द्र, प्रेम, निरंतरता को सकारात्मक स्वरूप का निर्माण करना, निगेटिविटी को पॉजिटिविटी में बदलना यह कार्य थॉट्स लैब में किया जाएगा जो कि अपने आप में अनोखा ओर सराहनीय पहल है।

ब्रह्माकुमारीज़ विश्व की नारी शक्ति द्वारा संचालित सबसे बड़ी संस्था है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में संस्था का यह अनुकरणीय पहल है। संस्था द्वारा व्यक्तित्व निर्माण का जो कार्य किया जा रहा है वह आज बहुत जरूरी है।

ब्रह्माकुमारीजकेकार्यकारीसचिवएवंशिक्षाप्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय ने बताया कि संस्थान 86 वर्षों से कार्य कर रहा है। लोगों के थॉट्स के लेवल को पॉजिटिव और पावरफुल बनाने के लिए शिक्षा प्रभाग द्वारा देशभर में थॉट्स लैब की स्थापना की जा रही है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों के विचारों को पॉजिटिव बनाने की सेवा हो रही है।

माउंट आबू से पधारी शिक्षाविद सेवा प्रभाग की उपाध्यक्ष बीके शीलू ने कहा कि रोज कुछ पल एकांत में बैठकर सोचें कि मैं क्यों इस सृष्टि पर आया हूँ? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? मुझे क्या करना है? राजयोग के अभ्यास से हमें स्व का और परमात्मा का सत्य परिचय मिलता है।

अजमेर सबजोन की निदेशिका बीके शांता ने कहा कि जब से मैं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ी हूं तब से लेकर आज तक मेरा प्रयास रहा है कि मैं बोलने से ज्यादा अपने कर्मों से प्रैक्टिकल उदाहरण पेश करूं।

पीस पैलेस भवन की स्थापना में अहम भूमिका निभाने वाले व्यापार एवं उद्योग प्रभाग के उपाध्यक्ष एमएल शर्मा ने कहा कि मुझे 6 साल पहले लास्ट स्टेज का कैंसर हो गया था और डॉक्टर्स ने मना कर दिया था कि बचने की उम्मीद कम है। फिर मुझे चिकनगुनिया और कोरोना हुआ लेकिन 92 वर्ष की उम्र में भी आज पूरी तरह स्वस्थ हूं और ईश्वरीय सेवा में जुटा हूं। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से परमात्मा स्वयं आकर अपना दिव्य कर्तव्य कर रहे हैं। संचालन शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके सुमन ने किया। आभार पीस पैलेस की निदेशिका बीके हेमा दीदी ने माना।

थॉट्स लैब से सिखा रहे सोचने का तरीका-

डॉ. प्रो. मुकेश ने कहा कि हमने अपने बच्चों को सब कुछ सिखाया लेकिन यह नहीं सिखाया कि सोचना कैसे है? नकारात्मक विचारों को सकारात्मक और हीन विचारों को उत्साह में बदलना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। पिछले सात साल से उनके संस्थान में थॉट्स लेबोरेटरी चल रही है। इसमें अब तक दस हजार विद्यार्थी जुड़े हैं। जो बच्चे पहले हीन भावना और नशे से जुड़े थे आज वह उत्साह के साथ बदलाव की नई इबादत लिख रहे हैं। थॉट्स लैब में विद्यार्थियों को सोचने का तरीका सिखाया जा रहा है।

राजकोट के हैप्पी विलेज में गोल्डन हाउस का उद्घाटन

» शिव आमंत्रण, सूरत/गुजरात। शहर के निकट प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हैप्पी विलेज में स्वर्णिम दुनिया की याद दिलाने वाले गोल्डन हाउस का उद्घाटन एवं प्रभु सेवा में समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनों के 121 मात-पिता का सम्मान समारोह रखा गया। संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके संतोष, गुजरात ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका बीके भारती, बीके अमर ने शिव ध्वज लहराकर एवं रिबन काटकर उद्घाटन किया। संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके संतोष ने कहा कि आप सभी माता-पिता बहुत ही भाग्यशाली हैं। परमात्मा पिता ने अपना सन्देश जन-जन तक पहुंचाने के लिए अपनी बेटियों को ईश्वरीय सेवा में समर्पित करने के लिए आप जैसे महादानी माता-पिता को चुना है। बीके भारती ने कहा कि अपनी बेटियों को प्रभु सेवा में समर्पित करना ही सच्चा कन्यादान है। मधुबन से पधारे बीके नीतिन और बीके डॉ. विवेक ने भी गीत और शायरी के माध्यम से कार्यक्रम को चार चांद लगा दिए।

श्रीमद् भगवद गीता को व्यवहार में उतारने से जीवन बनेगा खुशनुमा

» शिव आमंत्रण, अटलादरा/बड़ोदरा (गुजरात)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से तीन दिवसीय श्रीमद भगवद गीता का व्यवहारिक स्वरुप, सकारात्मक जीवन शैली और परमात्म अनुभूति विषय पर शिविर का आयोजन किया गया। आबू पर्वत से पधारीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं गीता विदुषी बीके ऊषा दीदी ने कहा कि श्रीमद भगवत गीता को व्यवहार में उतारने से जीवन खुशनुमा बन जाएगा। कार्यक्रम का शुभारंभ राजमाता शुभांगिनी राजे गायकवाड़, कुलपति विजय कुमार श्रीवास्तव, कच्छ कैमिकल लिमिटेड के प्रबंध संचालक शिवलाल गोयल, रेइन हार्ट टेक्नीक के शिविंदर चावला, जगदीश फूड्स प्रा.लि. के नितिन भाई, वेलकेयर हॉस्पिटल के डॉ. भरत मोदी, बीके राज दीदी, बीके अरुणा, बीके पूनम ने 108 दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस मौके पर अटलादरा सेवाकेंद्र की संचालिका बीके अरुणा ने शिविर में पहुंचे सभी भाई-बहनों को सेवाकेंद्र पर आकर राजयोग मेडिटेशन सीखने के लिए कहा।

सार समाचार

गोवर्धन पीठ पुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती का किया सम्मान

» शिव आमंत्रण, सोनीपत (हरियाणा)। गोवर्धन पीठ पुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती के सोनीपत आगमन पर दीनबंधु छोटू राम यूनिवर्सिटी के कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके प्रमोद द्वारा सम्मान किया गया। इस दौरान उन्हें माउंट आबू पधारने का भी निमंत्रण दिया। साथ ही संस्थान की सेवाओं के बारे में बताया।

ब्रह्माकुमारी बहनों ने स्कूल और मंदिर परिसर में किया पौधारोपण

» शिव आमंत्रण, सोनीपत (हरियाणा)। हरसाना कलां गांव में सेक्टर 15 सोनीपत सेवाकेंद्र की ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा सरकारी स्कूल और मंदिर परिसर में पौधारोपण किया गया। राजकीय विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र और अध्यापक मौजूद रहे। बीके प्रमोद ने बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया। पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारियों को निभाने के लिए प्रेरित किया तथा संरक्षण हेतु प्रतिज्ञा कराई। वहीं हरसाना कला के वैष्णो माता मंदिर में कमेटी सदस्यों के साथ पौधारोपण किया गया। इस दौरान हरसाना कलां गांव के सरपंच रामकरण, राजकीय विद्यालय के प्रिंसिपल अशोक तथा अन्य अध्यापक और गांव के अन्य सदस्य भी मौजूद रहे।

परमात्म संदेश देने के लिए 'प्रभु प्रिय धाम' समाज के लिए समर्पित

» शिव आमंत्रण, मथूरा (उप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के मथूरा स्थित नवनिर्मित उप सेवाकेंद्र भवन प्रभु प्रिय धाम का उद्घाटन भागवताचार्य बालयोगी महाराज (रमणरेती मथुरा) आबू शांतिवन से पधारीं बीके रुक्मिणी, आगरा से बीके शीला, भरतपुर से बीके कविता, आगरा से बीके अश्विनी, आबू से गीतकार बीके रमेश, बीके सीता, बीके भावना, बीके सीमा ने किया। इस दौरान बीके रुक्मिणी ने कहा कि प्रभु प्रिय धाम में आकर लोगों की परमात्म मिलन की प्यास और आस पूरी हो सकेगी। यहां से लोगों को सच्चा गीता ज्ञान मिलेगा। राजयोग ध्यान से जीवन में सुख-शांति आएगी। जीवन जीने की कला मिलेगी।

प्रशासक सेवा प्रभाग] ट्रेनिंग-साधना कार्यक्रम में पहुंचे 500 भाई-बहनें

प्रशासन और प्रबंधन का आधार है स्व प्रशासन

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। प्रशासनिक अधिकारियों के जीवन को हर प्रकार से दबाव और तनाव से मुक्त बनाने के लक्ष्य को लेकर चार दिवसीय ट्रेनिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशासक सेवा प्रभाग की अध्यक्ष बीके आशा ने कहा कि एक होता है प्रशासन, दूसरा होता है प्रबंधन। किन्तु प्रशासक प्रभाग में प्रशासन भी है और प्रबंधन भी है। इन दोनों का आधार है स्व प्रशासन। जो स्वयं को अनुशासन में रखना जानता है वह दूसरों को भी अनुशासन में रख सकता है। प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके हरीश ने कहा कि समाज में जितने भी अधिकारीगण हैं जैसे आईएएस, आईपीएस, आईएफएस, आईआरएस, सेक्रेटरी इन सभी के पास पावर होती है और बुद्धिमता भी होती है इन बड़े अफसरों की सेवा हम कैसे करें? उसके लिए हमें अपने आपको तैयार करना होता है।

राष्ट्रीय संयोजिका बीके अवधेश ने कहा कि सारे संसार में जितने भी प्रभाग हैं उन सभी को व्यवस्थित तरीके से चलाने का नाम है प्रशासन। प्रशासन हमारी कार्य क्षमता को बढ़ाता है। प्रशासन माना स्वयं में शासन करना। लखनऊ से आईं क्षेत्रीय संयोजिका बीके राधा, जयपुर से आई हुई वहां कि क्षेत्रीय संयोजिका बीके पूनम, ईस्टर्न कोलकाता से आई क्षेत्रीय संयोजिका बीके कानन, रिटायर्ड (आईएएस) बीके सीताराम मीणा, ओरआरसी दिल्ली की फैकल्टी मेम्बर बीके वैधात्री, भोपाल से पधारीं क्षेत्रीय समन्वयक डॉ. बीके रीना ने भी अपने विचार व्यक्त किए। राजयोगी बीके शैलेश ने आभार व्यक्त किया।

आध्यात्म को अपनाना वर्तमान समय की जरूरतः मुख्य सचिव

» शिव आमंत्रण, जम्मू (जक)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा दयालुता और करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय के तहत सुशासन व प्रशासकों के सशक्तिकरण पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि जम्मू-कश्मीर के मुख्य सचिव अरुण कुमार मेहता (आईएएस) ने कहा कि अध्यात्म को अपनाना वर्तमान समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हमें बुराइयों को सहना नहीं चाहिए और न ही शिकायत करनी चाहिए। हमें बुराइयों से लड़ना चाहिए तभी हमारी आत्मा शुद्ध हो सकती है। हम इसे योग की मदद से हासिल कर सकते हैं जो कि ईश्वर से जुड़ने का तरीका है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रशासक के अन्दर दया और करुणा भाव का होना सुशासन और सतत प्रगति के लिए बहुत सहायक हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में संभागीय आयुक्त रमेश कुमार (आईएएस) भी कार्यक्रम में मौजूद थे। उपकुलपति जेपी शर्मा ने कहा कि दया और करूणा मानवता के लिए अमूल्य गुण हैं। यदि हम आध्यात्मिक रूप से मजबूत हैं तभी हम इन गुणों का उपयोग कर सकते हैं। बीके विधात्री ने कहा कि समाज के लिए प्रशासनिक वर्ग का काम उचित, सुखद और आसान होना चाहिए। चुनौतियां व्यक्ति के भीतर छिपी शक्तियों, गुणों और क्षमताओं को जगाती हैं। प्रभाग के उत्तरी क्षेत्र समन्वयक बीके प्रेम ने विंग का परिचय दिया। प्रभाग की अध्यक्ष बीके आशा ने प्रेरणा दी। बीके शेफाली ने योग की अनुभूति कराई। प्रभाग के उत्तरी क्षेत्र समन्वयक बीके रतन ने संस्था का परिचय दिया। बीके निर्मल ने आभार माना। संचालन क्षेत्रीय समन्वयक बीके रविंदर ने किया।

स्व प्रबंधन से ही होगा तनाव मुक्त जीवनः बीके कल्पना

» शिव आमंत्रण, छतरपुर (मप्र)। पुलिस लाइन स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में पदस्थ आरक्षक से पदोन्नत प्रधान आरक्षकों का छह दिवसीय इंडक्शन कोर्स जिला स्तर पर करवाया गया। इसमें पुलिस स्टाफ को स्ट्रेस एंड इमोशनल मैनेजमेंट तथा खुशनुमा जीवन का प्रशिक्षण देने के लिए आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी बहनों को भी आमंत्रित किया गया। राजयोग शिक्षिका बीके कल्पना ने सभी को तनाव मुक्त जीवन विषय पर बोलते हुए कहा कि भावनात्मकता मन की एक कोमल भावना है लेकिन आवश्यकता से अधिक भावुक होना हमारे लिए तनाव का कारण बन जाता है जिसके कारण हम छोटी-छोटी बातों को पकड़ कर बैठ जाते हैं और उसे बार-बार याद करके छोटे से बड़ा बना देते हैं जिससे हमारे संबंधों में कड़वाहट घुल जाती है। तनाव से मुक्त होने के लिए सबसे पहले हमें स्वयं की पहचान होना जरूरी है। जब हम स्वयं के सत्य स्वरूप को सदा याद रखते हैं और इस सृष्टि में आने का उद्देश्य याद रखते हैं तो तनाव की परछाई छू भी नहीं सकती है। तनाव तभी होता है जब हम अपने आप को भूल जाते हैं। इस कार्यक्रम में 50 प्रधान आरक्षकों ने भाग लिया।

सभी ने ब्रह्माकुमारी बहनों से अपील की कि ऐसे प्रेरणादाई कार्यक्रम से हमें हिम्मत मिलती है इसलिए आप लोग ऐसा ही मार्गदर्शन हमें देती रहें। प्रारम्भ में छतरपुर विश्वनाथ कॉलोनी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रमा ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का परिचय दिया। कार्यक्रम के अंत में बीके भारती ने कमेंट्री के द्वारा मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई।

सार समाचार

अंतरराष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव में पधारे हरियाणा के मुख्यमंत्री

» शिव आमंत्रण, कुरूक्षेत्र (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव पर कुरूक्षेत्र में स्टॉल लगाया गया और लोगों को गीता संदेश दिया गया। साथ ही आध्यात्मिक प्रदर्शनी के माध्यम से राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, विधायक सुभाष सुधा एवं मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार कृष्णकुमार बेदी के पहुंचने पर बीके सरोज ने मुख्यमंत्री को सेवाओं के बारे में अवगत कराया तथा ईश्वरीय सौगात भेंट की।

छात्रावास में मनाया बाल दिवस

» शिव आमंत्रण, पन्ना (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के तत्वावधान में पन्ना में सीडब्लूएसएन दिव्यांग छात्रावास में दिव्यांग बच्चों के साथ बहनों ने बाल दिवस मनाया। प्रस्तुत चित्र में बीके बहनों के साथ दिव्यांग बच्चे और वहां का स्टाफ दिखाई दे रहा है।

जन प्रतिनिधियों में नैतिक, चारित्रिक मूल्यों का होना जरूरी: बीके उर्मिला

» शिव आमंत्रण, झोझूकलां (हरियाणा)। गांव के सर्वांगीण विकास के लिए नैतिक चारित्रिक व जीवन मूल्यों का जीवन में होना आवश्यक है यह उद्गार मासिक पत्रिका ज्ञानामृत की सह सम्पादिका बीके उर्मिला ने व्यक्त किए। वह मैहड़ा गांव में नवनिर्वाचित सरपंच पंच सम्मान समारोह में बोल रही थीं। उन्होंने नवनिर्वाचित सरपंच व पंचों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि अगर हम वास्तव में गांव का विकास करना चाहते हैं तो सबसे पहले हमें अपने व्यक्तित्व का विकास करना होगा। जाति, धर्म, अमीरी, गरीबी आदि भेदभाव से ऊपर उठकर अपनी सोच को सकारात्मक बनाना होगा। उन्होंने आगे कहा कि ईट सीमेंट गारा आदि से गली व भवनों आदि का निर्माण कर सकते हैं लेकिन नैतिक व जीवन मूल्यों से हम स्वयं के साथ-साथ ग्रामवासियों का भी हर तरह से विकास करना होगा। क्षेत्रीय प्रभारी बीके वसुधा ने कहा कि घर गृहस्थ में रहते हुए स्वचिंतन व परमात्म चिंतन के लिए समय निकालें। अध्यात्म को जीवन में धारण करें। नवनिर्वाचित सरपंच विकास सांगवान ने कहा कि हम गांव का चहुंमुखी विकास करेंगे सामाजिक कुरीतियों को आध्यात्मिकता के बल पर समाप्त कर गांव का विकास करेंगे। झोझूकलां सेवा केंद्र प्रभारी बीके ज्योति ने सभी का आभार व्यक्त किया। सरपंच व पंचों को शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

पिछले अंक से क्रमशः

रोज संकल्प करें- भगवान हर पल मेरे साथ है, मेरा साथी है

उच्च संकल्पों के प्रयोग से खुशनुमा माहौल बनायें

शिव आमंत्रण, आबू रोड। बहुतों ने बुरे कर्म कर लिए हैं। अपने इस जीवन में वह उनको याद आते रहते हैं, जिसे याद करने से दुःख मिलता है, इसलिए पास्ट को पूरी तरह से समाप्त करना है। बाबा तो ये बोला करते थे पास्ट को ऐसे समझ लो जैसे पुराने जन्म की बात है। अभी तो नया ब्राह्मण जन्म हो गया। उस पुराने जन्म में जो कुछ किया या हुआ है, किसी ने हमें तकलीफ दी या हमारे द्वारा कई गलतियां हो गई हों। लेकिन अगर वह न होता तो हम यहां न आते। हम भगवान के पास ना आते अगर वो सब बातें न होती। बहुत सी आत्माओं को उनका दुःख भगवान के पास ले आया, कईयों की उनकी परेशानी यहां ले आई, बुरी घटनाएं यहां ले आयी हैं। सच्चा सुख ईश्वरीय मिलन में हैं। खुशी अंदर से पैदा होगी, दूसरों से नहीं मिलेगी।

अंदर से जो खुश रहना सीख ले वो तो खुशनसीब और जो सोचे दूसरे मुझे खुश रखें, अच्छा बोलें, मेरी सेवा करें, मुझे मान दें, मेरी प्रशंसा करे तो वो व्यक्ति सदा ही दुःखी रहेगा। एक तो पास्ट को पूरी तरह से खत्म करना है। कइयों को होती है भविष्य की चिंता। कई तो सोच-सोचकर दुःखी हैं, है कुछ नहीं। सोच रहे हैं और दुःखी हो रहे हैं इसलिए भविष्य का सदा ही बहुत सुंदर संकल्प रखना। रोज सुबह उठते ही संकल्प करना मैं बहुत भाग्यवान हूं, बहुत सुखी हूं क्योंकि भगवान मेरे साथ है। इसलिए मेरे साथ सबकुछ बहुत अच्छा होगा। बाबा ने हम सभी को एक बहुत सुंदर स्वमान दिया हुआ है। मैं मास्टर क्रियेटर हूं, मास्टर रचयिता। भविष्य को बनाने का अधिकार हमें हैं। भविष्य हमारे हाथ में है।

जैसे संकल्प करेंगे, वैसा हमारा भाग्य होगा-

जैसे सुंदर संकल्प हम करेंगे वैसा ही हमारा भविष्य होगा। भविष्य की चिंता नहीं करो। बुरा भी अच्छे में बदल जाएगा। जब सारे संसार को भोजन नहीं मिलेगा बाबा अपने बच्चों को दाल-रोटी खिलाता रहेगा और क्या चाहिए। जब संसार को आग लगेगी बाबा के बच्चे सेफ रहेंगे, लेकिन उन्हीं को बाबा पर विश्वास होगा, जिन्होंने समर्पण भाव अपनाया है, जिन्होंने उसकी आज्ञा को पालन किया है। जिसने उसके प्यार को जीत लिया वो उनकी सुरक्षा बहुत करेगा, कष्ट नहीं होने देगा। तो मेरे साथ बहुत कुछ अच्छा होगा। मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। अब वो सब नहीं होगा जो आज से 50 साल पहले होता था, बच्चे मां-बाप के आज्ञाकारी। अब तो छोटों को आपको सम्मान देना पड़ेगा तब वो आपकी बात सुनेंगे। अपनी कामनाओं को कम करना ही है।

हर आत्मा का अपना पार्ट है-

बाबा ने बहुत सुंदर ज्ञान दिया है हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। पार्ट भी अपना, भाग्य भी अपना, बुद्धि भी अपनी, संस्कार भी अपने। अपनों से ही आज कल सबको ज्यादा कष्ट हो रहा है। जहां भी कष्ट हो रहा हैं खुशी जा रही है वो अधिकतर लोग अपने हैं। अपनों से कामनाएं भी बहुत होती हैं। अपनों पे अधिकार भी होता हैं, अपनों को कुछ कहा भी जाता है। बाबा ने कह दिया बच्चे तुम्हें बहुत खुशी होनी चाहिए भगवान के सम्मुख बैठे हो, मैं तुम्हें स्वर्ग की राजाई देने आ गया हूं, भगवान तुम्हारे घर में मेहमान बनकर आ गया है। बहुत बड़ी खुशी की बात है, मैं तुम्हारे लिए हथेली पर स्वर्ग ले कर आया हूं। खुशी की बात है। ऐसी बातें हमें डायरी में नोट करनी हैं।

अच्छी बातों को लिखकर जेब में रखें-

20-25 बातें खुशी की, 20-25 बातें ईश्वरीय नशे की होनी ही चाहिए। इसे पढ़ते रहेंगे बातें हल्की होती रहेंगी। हमेशा लिख कर रख लो भगवान हमारे साथ है, पढ़ लिया करो रोज। साथ होने के दो मतलब होते हैं। पहला स्थूल रूप से साथ रहते हो दूसरा है आपका किसी बड़े आदमी से कनेक्शन हो आपके शहर में, यह आपका कोई रिलेटिव बड़ा आदमी हो आपको नशा रहता है न फलाना आदमी मेरे साथ है। इधर भगवान हमारे साथ हैं तो डरने की क्या बात है। एकांत में हमारा चिंतन बहुत अच्छा चलेगा। लिखा करेंगे सभी अच्छी-अच्छी बातें। पुरुषार्थ के लिए कुछ बातें-भगवान मुझे साथ दे रहा है, कौन मुझे साथ दे रहा है ये नशा चढ़ता रहे? स्वयं भगवान मुझे साथ दे रहा है। अपने चारों ओर रोज सवेरे और शाम शक्तियों का घेरा बनाना है।

जब अंदर पारदर्शिता हो तो बुद्धि बन जाती है पवित्र

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

कभी-कभी परख शक्ति न होने के कारण व्यक्ति अच्छे अवसर हाथ से गंवा देता है।

'एक गरीब लड़का कहीं जा रहा था, उसे रास्ते में एक चमकता हुआ पत्थर दिखाई दिया। उसने वह पत्थर उठा लिया और सोचने लगा कि इस पत्थर को छेद कर अपने गधे के गले में रस्सी से बांध कर लटका देगा। उसने ऐसा ही किया और अपने गधे पर बैठ कर चलने लगा। रास्ते में एक जौहरी जा रहा था वह गधे के गले में चमकते पत्थर को देख समझ गया कि यह तो कीमती हीरा है। उसने लड़के को पूछा कि यह तो कीमती हीरा है। उसने लड़के को पूछा कि यह गधे के गले में क्यों पहनाया? उसे बेचने से पैसे मिल जाते। लड़के ने पूछा कि इस पत्थर को कौन खरीदेगा? जौहरी ने कहा कि तुम मुझे दे दो तो मैं तुम्हें सौ रूपया दूंगा।

लड़के ने सोचा कि अगर वह व्यक्ति सौ रूपया दे रहा है तब तो यह कीमती होगा। उसने कहा कि नहीं मुझे तो दो-सौ रूपया चाहिए। आप मुझे दो सौ रूपया दो।

जौहरी ने सोचा कि मैं मना कर दूंगा तो वह लड़का मुझे सौ रूपया में ही दे देगा। उसने मना कर दिया तो वह लड़का अपने गधे के साथ आगे बढ़ गया। वह एक सराय पर रूका तो वहां एक दूसरे जौहरी ने गधे के गले में वह हीरा देखा तो उसने उस लड़के से पूछा कि तुम यह पत्थर बेचोगे? तो लड़के ने कहा कि देखो यह पत्थर मैं दो सौ रूपये में बेचूंगा एक रूपया भी कम नहीं लूंगा, लेना है तो बोलो। जौहरी ने तुरन्त उसे दो सौ रूपया देकर उससे वह हीरा ले लिया और खुश होकर जाने लगा। उतने में पहले जौहरी ने सोचा कि कहीं और कोई उसे खरीद न ले उससे तो मैं दो सौ में ही खरीद लेता हूँ।

वह दौड़ते हुए लड़के को पुकारते हुए पीछे से आया और लड़के को कहने लगा ठीक है लो मैं तुम्हें दो सौ रूपया देता हूं तुम मुझे वह पत्थर दे दो। तब उस लड़के ने कहा कि वह तो मैनें एक सज्जन को दो सौ रूपये में बेच दिया। तो वह जौहरी अपना सिर पकड़कर कहने लगा, अरे मूर्ख। वह हीरा था जो बहुत ही कीमती था और तूने उसे दो सौ रूपये में ही दे दिया। उस लड़के ने कहा कि मुझे तो ज्ञान नहीं था कि वह हीरा है और उसकी कीमत कितनी है, परन्तु तुम्हारे पास तो ज्ञान था, फिर भी तुमने गंवाया सिर्फ सौ रूपये के कारण, तो मूर्ख मैं या तुम?''

कहने का भाव है कि कभी-कभी हमारे पास सही ज्ञान न होने के कारण हम सही वक्त पर किसी बात को परखते नहीं और फिर नुकसान को भोगते हैं। जितना हमारे अंदर पारदर्शिता होती है या हमारी बुद्धि शुद्ध एवं पवित्र होती है उतना ही हम हर बात की या परिस्थिति की सच्चाई को स्पष्ट देखते हुए उसे परख लेते हैं और जीवन में उसका लाभ उठाते हुए आगे बढ़ सकते हैं।

कभी-कभी यही परख शक्ति न होने के कारण व्यक्ति अच्छे अवसर हाथ से गंवा देता है और जब दूसरे उस अवसर का लाभ ले लेते तब हम हाथ मलते रह जाते हैं। अक्सर व्यक्ति में परख शक्ति की कमी इसलिए होती है क्योंकि मोह में उसका तीसरा नेत्र ही बंद हो जाता है। जैसे धृतराष्ट्र मोह में अंधा था तो वह सत्य-असत्य, भलाई-बुराई, न्याय-अन्याय के बीच यथार्थ परख नहीं सका था इसलिए वह पाण्डवों के साथ न्याय नहीं कर पाया।

कहने का भाव है कि कभी-कभी व्यक्ति अपने स्वार्थ में अंधा होता है या मोह जाल में इस तरह फंसा होता है कि उसे यह भी समझ नहीं रहती कि सही बात को न परखने से दूसरों के प्रति अन्याय करके उन्हें कितना कष्ट पहुँचाता है।

तन स्वस्थ है तो मन स्वस्थ होगा

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

यदि चिंता है तो मतलब किसी न किसी धारणा या मर्यादा में कमी है

विकारों से भी गहरी आदत भोजन की है। बहुत लोग इस गहरी आदत के शिकार हैं। जब देवताएं भी भोजन से मुक्त नहीं हैं और जब तक इस गहरी आदत में आघात नहीं किया जाता, तब तक चेतना में हलचल नहीं होती है और उसी हलचल की अवस्था में नए संस्कारों के बीज डाले जाएं तो कुछ नया होगा। भोजन को मौन में स्वीकार करना। प्रसन्नता के साथ कोई शिकायत नहीं, न ही उसका वर्णन करते हुए इसमें ये बहुत है, ये कम है, न ही उसके स्वाद का वर्णन।

बिना स्वास्थ्य के आध्यात्म फेल

चार चीजें कम कर दो या हटा दो। पहला तेल, दूसरा शक्कर ये सब लत हैं। उत्तेजना पैदा करते हैं, तीसरा नमक जितना नमक डालोगे उतना पानी मांगेगी शरीर। जिसने नमक को हटा दिया उत्तेजना अपने आप शांत हो जाएगी। चौथा अनाज कम करते जाओ। देवताएं पहले फल खाते थे जब से अनाज खाने लगे क्योंकि अनाज के लिए चार-पांच चीजें चाहिए। उसमें आग चाहिए, मसाले चाहिए, नमक चाहिए, तेल चाहिए, शक्कर चाहिए इन घातक चीजों ने शरीर में अनाज के द्वारा प्रवेश किया।

द्वापर से देवताओं का पतन दो कारणों से हुआ। पहला देह भान, दूसरा आग। जिस चीज को आग में डाला गया वो खत्म। जो जितना अनाज खाते हैं उनको चार चीजें होती हैं। दोपहर में

नींद, आलस्य, प्रमाद, जड़ता शरीर में। अगर तीन बार खाते हैं तो दो बार कर दो। दो बार खाते हैं तो एक बार कर दो। अपने आप शरीर में नई ऊर्जा जागेगी और बिना स्वास्थ्य के आध्यात्म फेल है। जिसका शरीर ही साथ नहीं दे रहा, वो कहां से आध्यात्म का अभ्यास करेगा, कहां से अशरीरीपन, कहां से उमंग-उत्साह आएगा। सारा ध्यान बीमारी की तरफ जाएगा।

आध्यात्म की शर्त है स्वस्थ्य शरीर। न केवल स्वस्थ्य, उसमें तीन चीजें हैं। पहला लचीला, दूसरा स्टैमिना, तीसरा सक्रिय शरीर। फल-सब्जी जितना हो सके कच्चा या तो फिर उबाला हुआ या तो फिर भाप वाला। जितना उसको पकाया जाता उतना उसके पोषक तत्व नष्ट होते हैं और जो स्वाद है वह केवल मसालों का स्वाद है और कुछ भी नहीं।

असली स्वाद तो पता ही नहीं किसी को और जब शरीर उच्च कंपन भोजन से भरा होता है जो हम खा रहे हैं वो राजसिक है उत्तेजना वाला है। हम इसके हाथ का नहीं खाते, हम उसके हाथ का नहीं खाते, प्याज-लहसुन नहीं खाते, बीमारी तो उतनी ही है जितना ये सब खाने वाले को है।

आत्म अभिमानी में सबसे बड़ी बाधा है हमारा भोजन-

आत्म अभिमानी बनने में सबसे बड़ी बाधा है भोजन। जब तक इस पर काम नहीं किया जाए आत्मा चिपकी रहेगी शरीर से नीचे। इसको उड़ाना है ऊपर, हल्कापन आ जाए शरीर में। भागने को कहो तो कितना भी भागे, कसरत करने को कहो तो कितना भी कसरत करे, कितनी भी सीढ़ियां चढ़े, ऐसी शक्ति, ऐसी ताकत तभी आएगी जब भोजन हल्का हो। अव्यक्त और साकार महावाक्य हैं - बाबा के योगी का भोजन सूक्ष्म से सूक्ष्मतम होता जाएगा, खुशी जैसी खुराक नहीं। खुशी ही उसकी खुराक है। योग में बैठ गए तो ऐसे बैठ गए की खो गए उसे याद ही नहीं। सबसे बुरी आदत है भोजन। ये खाऊं वो खाऊं, क्या खाऊं और कब खाऊं। अभी-अभी नाश्ता किया, अभी-अभी टोली खाई। दोपहर में क्या बनाना हैं। दिन-रात बुद्धि घूम रही है उधर था विषय वैतरणी नदी से निकले तो तेल वैतरणी नदी में डूबे हुए हैं। रोटी है उसको तेल लगाओ, चावल है सफ़ेद उसका कलर चेंज करो, दाल बनी हुई है उसको वापस डालो। सूरज ने इतनी मेहनत से पकाया है। पका-पका के अम्लीय भोजन बन जाता हैं। कितने सारे लोग हैं उनको पेट की समस्या है। योग ही नहीं करने देता हैं। परमधाम में उड़ने नहीं देता है। पेट नीचे खींचता है।

विकार आते ही तब है जब शरीर में उत्तेजना वाले पदार्थ डाले जाते हैं। एक तरफ़ है अशोक वाटिका जहां हम जा रहे हैं। ब्राह्मणों ने बीच में छौंक वाटिका बना लिया है। छौंक लगाते हैं हर चीज को क्योंकि इसको ऐसे ही आदत पड़ गई है, इसको केवल चाहिए, यह गुलामी है। इस गुलामी से मुक्ति, यह एक महत्वपूर्ण कदम है। आध्यात्म की यात्रा में और बीमारी से मुक्त हो जाएंगे, कोई बीमारी आएगी ही नहीं। जो प्राकृतिक है, जो सूर्य का पका हुआ है उसमें ऊर्जा है, शक्ति है, तेज है।

सभी समस्याओं का कारण हमारा मन है: डॉ. मोहित

शिव आमंत्रण, रायपुर (छग)। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग द्वारा विधानसभा मार्ग स्थित शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में स्वास्थ्य परिचर्चा का आयोजन किया गया। विषय था- स्वस्थ तन प्रफुल्लित मन। नई दिल्ली से पधारे जी.बी. पन्त हॉस्पिटल नई दिल्ली के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित दयाल गुप्ता ने कहा कि जीवन की सभी समस्याओं का कारण हमारा मन में छिपा है। हमारे विचारों में बहुत शक्ति होती है। हम जैसा सोचते हैं वैसा ही हमारा मस्तिष्क अपने को उन्हीं विचारों के अनुरूप ढाल लेता है। अपने जीवन का निर्माण हम स्वयं करते हैं। सारे दिन में हमारे मन में लगभग 25 हजार विचार पैदा होते हैं। जिनमें से 90 प्रतिशत विचार निगेटिव अथवा व्यर्थ होते हैं।

उन्होंने कहा कि सिर्फ दस प्रतिशत विचार ही रचनात्मक होते हैं। यदि हमारे विचार ही व्यर्थ होंगे तो जीवन श्रेष्ठ कैसे बन सकता है? इसलिए श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए अपने विचारों में श्रेष्ठता लानी होगी। हमारे विचार ही हमारे जीवन का निर्माण करते हैं। जिन लोगों के जीवन में कोई लक्ष्य नहीं होता। खुशी नहीं होती है उनका बायोलॉजिकल उम्र तनाव के कारण अस्सी-नब्बे साल के बुजुर्ग व्यक्ति की तरह हो जाता है। इसीलिए आजकल 18 से 30 साल की उम्र में ही हार्ट अटैक होने लगा है।

बालाजी सुपर स्पेशियालिटी हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. देवेन्द्र नायक ने कहा कि मरीज की इच्छा शक्ति उसे स्वस्थ बनाने में मदद करती है। उसकी सकारात्मक सोच से हीलिंग पावर बढ़ जाती है। संचालक चिकित्सा शिक्षा (डीएमई) डॉ. विष्णु दत्त ने कहा कि मानसिक तनाव स्वास्थ्य का सबसे बड़ा शत्रु है। स्वस्थ रहने के लिए मेडिटेशन बहुत ही अच्छी तकनीक है। योग करें, लोगों से मिले जुलें, ज्ञानवर्धक साहित्य पढ़ें और सामाजिक कार्यों से जुड़ें। हर परिस्थिति में खुश रहना सीखें तो आपका स्वास्थ्य हमेशा अच्छा बना रहेगा। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सविता ने स्वागत भाषण दिया।

पत्रकारिता से मूल्यनिष्ठा की अपेक्षा करना गलत नहीं

शिव आमंत्रण, डबरा/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर समाधान परक पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर- विषय पर मीडिया सम्मेलन का आयोजन किया गया। बीके डॉ. रीना ने कहा कि पत्रकारिता से मूल्यनिष्ठा की अपेक्षा करना गलत नहीं है। मीडिया का काम समस्या का समाधान बताना भी है। अनुविभागीय पुलिस अधिकारी विवेक शर्मा, वनवासी आवासीय विद्यालय सेवा भारती के सचिव मनोज मोदी, बीके सुधा, बीके रावेंद्र, बीके प्रहलाद ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सीता ने आभार माना। संचालन बीके अंजलि ने किया।

जो भी कर्म करते हैं उसका रिटर्न अवश्य मिलता है

शिव आमंत्रण, बेतिया/बिहार। ब्रह्माकुमारी के ओम शांति नगर, संत घाट प्रभु उपवन भवन का वार्षिक समारोह का मनाया गया। इसमें संचालिका बीके अंजना दीदी ने कहा कि हम जो भी कर्म करते हैं उसका रिटर्न हमें अवश्य मिलता है। चाहे वह हमें जल्दी ही क्यों न मिले, या फिर कुछ समय के बाद ही क्यों न मिले, लेकिन मिलता अवश्य है। मेडिकल कॉलेज की प्रधानाध्यापिका डॉ सुधा भारती, सुरेश भाई, शंभू भाई, रमन गुप्ता, अमित लोहिया, जैकी श्रॉफ, विनोद जायसवाल, अनिता जायसवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

ब्रह्माकुमारीज़ एकता-बंधुत्व की भावना को जोड़कर रखती है

शिव आमंत्रण, तलेन/हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा पत्रकार बंधुओं का सम्मान समारोह एवं स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें नगर के वरिष्ठ पत्रकारों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का विषय था करुणा एवं दया के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण स्नेह मिलन। विधायक गिरीश भंडारी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी एक ऐसी संस्था है जो एकता और बंधुत्व की भावना को जोड़कर रखती है। इनके शुभ संकल्पों के सकारात्मक प्रकम्पन से हमें जीवन में अच्छी प्रेरणा तथा समाज को एक नई दिशा मिल रही है। पूर्व विधायक मनमोहन शर्मा ने कहा कि भाईचारा प्रेम से बढ़ता है और इसीलिए स्नेह मिलन का मतलब परिवार के साथ सम्मिलित होना होता है। आज मुझे परिवार में सम्मिलित होकर बहुत अच्छा लगा और ब्रम्हाकुमारी तो ऐसी संस्था है जो विश्व में शांति का संदेश फैला रही है। हम सबको मिलकर ऐसी संस्था एवं बहनों को जरूर सहयोग करना चाहिए। बीके मधु ने कहा कि हमारे संस्था की इस वर्ष की थीम- दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिकता सशक्तिकरण। हमारे अंदर जब तक सभी के प्रति दया और करुणा की भावना नहीं होगी तब तक हम सबके मन से बुराइयाँ खत्म नहीं होंगी। मानवता के नाते हम सबको दया और करुणा खुद के अंदर पहले लानी होगा तभी हम दूसरों को करुणा और दया बांट सकेंगे। बीके मधु और बीके लक्ष्मी द्वारा ईश्वरीय सौगात देकर पत्रकारों का सम्मान किया गया। बीके बहनों का भी सम्मान गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया और बीके नीलम ने ब्रह्माभोजन का महत्व बतलाया। बीके सीमा ने राजयोग मेडिटेशन कराया तथा बीके सुमित्रा ने मंच संचालन किया।

सार समाचार

ब्रह्माकुमारी पद्मा प्रतिष्ठित चाणक्य पुरस्कार से सम्मानित

शिव आमंत्रण, कोलकाता/ पश्चिम बंगाल। पब्लिक रिलेशंस काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित 16वीं ग्लोबल कम्युनिकेशन कॉन्क्लेव में ब्रह्माकुमारी पद्मा को चाणक्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें यह प्रतिष्ठित पुरस्कार आध्यात्मिक प्रेरणा के क्षेत्र में वर्ष के कम्युनिकेटर के रूप में प्रदान किया गया। कान्क्लेव का आयोजन मैरियट फेयरफील्ड बैंक्वेट हॉल में किया गया। विषय था प्रतिष्ठा के संरक्षक- नई कथा का निर्माण। इस दौरान बिजली, आवास, युवा और खेल मंत्री अरूप बिस्वास, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के वरिष्ठ सलाहकार कंचन गुप्ता, एबीपी ग्रुप के सीईओ ध्रुबा मुखर्जी, टेक्नो इंडिया ग्रुप के संस्थापक और प्रबंध निदेशक सत्यम रॉय चौधरी आदि उपस्थित रहे।

सड़क दुर्घटना में जान गंवाने वालों की स्मृति में विश्व यादगार दिवस मनाया

शिव आमंत्रण, रतलाम (मप्र)। अधिकतर दुर्घटनाएं एकाग्रता भंग होने के कारण होती हैं। सड़क दुर्घटना में सिर पर चोट लगने की आशंका सबसे ज्यादा होती है। शरीर का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हमारा सिर ही होता है। इसलिए हेलमेट जरूर पहनना चाहिए। उक्त विचार यातायात ट्रैफिक के उपपुलिस अधीक्षक अनोखीलाल परमार ने ब्रह्माकुमारीज़ के डोंगरे नगर स्थित दिव्य दर्शन भवन केंद्र पर आयोजित विश्व यादगार दिवस कार्यक्रम में व्यक्त किए। शुभारंभ रतलाम के ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के महासचिव प्रदीप छिपानी, टेंपो-मैजिक यूनियन के अध्यक्ष अशोक पंचोली, सांसद प्रतिनिधि भारती पाटीदार, करणी सेना अध्यक्ष सुश्री सीमा देवड़ा, भाजपा मंडल अध्यक्ष सुश्री रेखा गौतम, सेवाकेंद्र संचालिका बीके सविता तथा बीके गीता द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। संचालन बीके आरती ने किया।

भारत के महान ग्रंथों में श्रीमद् भगवद् गीता सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है

शिव आमंत्रण, गया/बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ एपी कॉलोनी सेवाकेंद्र पर श्रीमद्भागवत गीता जयंती मनाई गई। इस दौरान कल्याण प्रधान न्यायाधीश रविंद्रनाथ त्रिपाठी, या जिला कारागार अधीक्षक विजय कुमार अरोड़ा, समाजसेवी राजू अग्रवाल, बीना देवी, डॉ. संजय वर्मा, आशा सिंह मुख्य रूप से मौजूद रहे। इस दौरान सेवाकेंद्र संचालिका बीके सुनीता ने कहा कि भारत के महान ग्रंथों में श्रीमद् भगवद् गीता सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। बीके पूजा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

गीता जयंती महोत्सव] ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन में सम्मेलन आयोजित

गीता पढ़ने के बाद दूसरा विषय पढ़ने की आकांक्षा समाप्त हो जाती है: शिव स्वरूपानंद सरस्वती

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। गीता जयंती पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन में सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि परमाध्यक्ष श्रीश्री 1008 आचार्य पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर स्वामी शिव स्वरूपानंद सरस्वती ने कहा कि गीता पढ़ने के बाद किसी दूसरे विषय को पढ़ने की आकांक्षा समाप्त हो जाती है। हम गीता को जीवन में अपना कर ही शांतिमय जीवन के साथ सच्चा सन्यासी बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि अगर और कुछ पढ़ कर संन्यासी बनना चाहते हैं तो वह बस बाह्य पाखंड ही होगा। हमने करीब से जाना है कि ब्रह्माकुमारीज गीता ज्ञान के आधार पर ही संसार की सबसे पवित्र संस्था है। यहां बहनें श्वेत वस्त्र में अंदर से सन्यासी हैं। यदि सही तरीके से परमात्म ज्ञान को जानना है तो इसके लिए जीवन के मर्म को समझना होगा। यहां आने के बाद लगता है कि यहां गीता का संदेश सही मायने में प्रसारित हो रहा है।

अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने कहा कि आज तक दुनिया ने गीता ग्रंथ को सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों की उपाधि दी है। गीता में भगवान ने काम विकार को महाशत्रु बताया है। लेकिन लोग इसे पढ़कर कंफ्यूज होते हैं। अगर महाशत्रु है तो हमारा जन्म तो इसी काम विकार से हुआ है। अगर हम गौर से विचार करें तो कामी व्यक्ति को ही पतित कहा जाता है ना कि क्रोधी, लोभी, अहंकारी को, क्योंकि भगवान ने सतोप्रधान सृष्टि रची थी। नई दुनिया बनाई थी लेकिन गीता अनुसार काम विकार रजोगुण से उत्पन्न होते हैं जो आज इसकी तमोप्रधानता हो गई है।

रघुनाथ मंदिर आबू पर्वत के वैष्णवाचार्य श्री महंत आचार्य डॉ. सियारामदास ने कहा कि आज सबके जीवन में महाभारत युद्ध छिड़ा हुआ है। हर कोई अपने को अर्जुन समझो और अपने जीवन की समस्याओं का संपूर्ण समाधान गीता को जीवन में अपना कर पाएं। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ऊषा ने कहा कि परमात्मा का स्वरूप ज्योति बिन्दू है। उसे याद करने से सभी मन के विकार समाप्त होने लगते हैं। शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्ष बीके शीलू ने राजयोग के बारे में गहरायी से बताया। चिकित्सा प्रभाग के सचिव बीके डॉ बनारसीलाल शाह, धार्मिक प्रभाग के संयोजक बीके रामनाथ और मंच संचालन कर रहीं दिल्ली से पधारीं बीके सपना के साथ कई गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए जो सबने अपने विचार व्यक्त किये।

यह भवन परमात्मा की प्रत्यक्षता का केन्द्र बनेगा: बीके आशा

» शिव आमंत्रण, रोहिणी सेक्टर 24 दिल्ली। नवनिर्मित वरदानी भवन में दीप जलाकर कई गणमाण्य व्यक्तित्व के साथ उदघाटन करती हुई ओम शांति रिट्रीट सेन्टर निदेशिका बीके आशा ने कहा कि यह वरदानी भवन परमात्मा की प्रत्यक्षता का केन्द्र बनेगा। लोग यहां सच्ची शांति प्राप्त करने को आयेगें। कार्यक्रम में वरिष्ठ प्रभारी बीके सरला, पांडव भवन की प्रभारी बीके पुष्पा, सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके लीना, फिल्म अभिनेता बीके सतवीर सोलंकी तथा अन्य अतिथियों के साथ करीब1500 लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

विनिंग द गेम ऑफ माइंड विषय पर सेमिनार आयोजित

» शिव आमंत्रण, हैदराबाद (तेलंगाना)। स्पोर्ट्स विंग द्वारा ग्लोबल पीस ऑडिटोरियम शांति सरोवर हैदराबाद में विनिंग द गेम ऑफ माइंड पर स्पोर्ट्स कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया। इसमें हजारों खिलाड़ी, युवा और खेल के प्रति उत्साही लोग शामिल हुए। मुख्य अवधारणा खेल बिरादरी को खेलों में मन की शक्ति की भूमिका की ओर ध्यान आकर्षित करना और मेडिटेशन और विजुलाइजेशन जैसी विभिन्न तकनीकों के माध्यम से इसे सशक्त बनाना था। खेल मंत्री वी श्रीनिवास गौड़, स्पोर्ट्स विंग के वाइस चेयरपर्सन बीके कुलदीप, बीसीसीआई के पूर्व मुख्य चयनकर्ता और क्रिकेट कमेंटेटर एमएसके प्रसाद, द्रोणाचार्य अवार्डी नेशनल एथलेटिक्स कोच रमेश नागापुरी, राष्ट्रीय तीरंदाजी कोच डॉ. पी रविशंकर, द हिंदू के उप संपादक (खेल) वीवी सुब्रह्मण्यम, स्पोर्टी साइकोलॉजिस्ट डॉ. सी वीरेंद्र, आराधना शर्मा, राष्ट्रीय समन्वयक बीके डॉ. जगबीर सिंह, मोटिवेशनल स्पीकर बीके ईवी गिरीश आदि शामिल हुए।

सार समाचार

अर्जुन वह है जो ज्ञान का अर्जन करे: बीके ऊषा दीदी

» शिव आमंत्रण, छतरपुर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के छतरपुर सेवाकेंद्र की ओर से आयोजित श्रीमद् भगवद् गीता के व्यवहारिक स्वरूप कार्यक्रम में सुबह और शाम के सत्रों में बड़ी संख्या में लोग गीता ज्ञान सुनने के लिए उमड़े। मुख्य वक्ता माउंट आबू से पधारीं बीके ऊषा दीदी ने कहा कि 'गीता मानवता का शास्त्र है, गीता जीवन जीने की कला सिखाती है, सर्व समस्याओं का समाधान है गीता । गीता हमारे जीवन की अनसुलझी गांठें खोलती है। उन्होंने सभी पांडवों के नाम का अर्थ बताते हुए कहा कि अर्जुन वह जो ज्ञान का अर्जन करे। इस मौके पर विधायक आलोक चतुर्वेदी, कलेक्टर संदीप जी, पुलिस अधीक्षक सचिन शर्मा, जज राजेश देवलिया, विधिक सेवा प्राधिकरण अनिल पाठक, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष पुष्पेंद्र प्रताप सिंह, पूर्व विधायक मानवेंद्र सिंह, पूर्व विधायक पुष्पेंद्र नाथ पाठक, नपा अध्यक्ष ज्योति चौरसिया सहित बड़ी संख्या में नागरिकगण मौजूद रहे।

गीता जयंती महोत्सव आयोजित

» शिव आमंत्रण, सोनीपत/हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के रिट्रीट सेंटर के 9वें वार्षिक उत्सव पर गीता जयंती महोत्सव आयोजित किया गया। इसमें जींद से पधारीं बीके विजय दीदी ने कहा कि कार्यक्रम से सब अपने परिवर्तन का शुभ संकल्प लेकर जाएं। रिट्रीट सेंटर की निदेशिका बीके लक्ष्मी ने कहा कि भगवान् ने सभी शास्त्रों का सार गीता के अंदर दिया हुआ है। गीता में दर्शाये गए सबसे मुख्य पात्र 'अर्जुन' की भूमिका सम्पूर्ण मानवता की है। करनाल सेवाकेंद्र से पधारी बीके निर्मल, कला एवं संस्कृति प्रभाग से नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके प्रेम, जालंधर सेंटर से पधारीं बीके लक्ष्मी, सोनीपत के सेक्टर-15 की सेवाकेंद्र संचालिका बीके प्रमोद, चंडीगढ़ से पधारीं बीके अनीता, शाहबाद से पधारीं बीके नीति, चरखी दादरी से पधारीं बीके प्रेम ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आशीर्वाद भवन का उद्घाटन

» शिव आमंत्रण, गया/बिहार। बिजावर/छतरपुर (मप्र)। बिजावर तहसील स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित आशीर्वाद भवन का उद्घाटन माउंट आबू से पधारीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ऊषा दीदी ने किया। इस दौरान विधायक बबलू शुक्ला के सुपुत्र धनंजय अभिराम शुक्ला, नगर पालिका अध्यक्ष लक्ष्मी वीर सिंह यादव, छतरपुर सेवाकेंद्र संचालिका बीके शैलजा दीदी, नौगांव सेवाकेंद्र संचालिका बीके नंदा दीदी, खजुराहो सेवाकेंद्र संचालिका बीके विद्या दीदी, बीके मीरा दीदी एवं माउंट आबू और भोपाल से पधारे बीके भाई मुख्य रूप से मौजूद रहे।

आध्यात्मिक मूल्यों के बिना जीवन अधूरा: बीके सुरेंद्र

शिव आमंत्रण, वाराणसी उप्र। ब्रह्माकुमारीज के कटरा बाजार सेवाकेंद्र का दसवां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। इसमें संस्था की पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं पश्चिम नेपाल की निदेशिका राजयोगिनी बीके सुरेंद्र दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्यों के बिना मानव जीवन अधूरा है। हमें बहुत ही गर्व है कि परमात्म पथ पर चलकर अनेक मनुष्य आत्माएं अपने जीवन को श्रेष्ठ एवं दिव्य बना रहे हैं। प्रबंधक राजयोगी बीके दीपेंद्र ने कहा कि परमात्म श्रीमत को अपने जीवन में उतार कर जन-जन के लिए प्रेरणा बनने वाले मानव ही महामानव हैं। मीडिया प्रभारी बीके विपिन ने भी संबोधित किया। संस्था से 10 वर्षों से अधिक समय से जुड़ कर अपने जीवन को श्रेष्ठता की राह पर चलाने वाले करीब छह दर्जन भाई-बहनों का अभिनंदन किया गया। इसमें क्षेत्रीय कार्यालय बनारस सहित गोंडा, नवाबगंज,रगड़गंज, मनकापुर, बलरामपुर, बदलापुर, परसपुर, कर्नलगंज आदि स्थानों की संस्था की समर्पित बहनें एवं भाइयों की उपस्थिति रही। स्वागत कटरा शाखा की संचालिका बीके निशा दीदी ने किया। बीके अमिता दीदी, सुनीता दीदी, रेखा दीदी, रणधीर भाई, प्रमोद भाई, सत्यनारायण भाई आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे। संचालन बनारस की बीके तापोषी ने किया।

मिट्टी की सुरक्षा के लिए करें पर्यावरण सुरक्षा

शिव आमंत्रण, रांची/झारखंड। विश्व मृदा दिवस पर हरमू रोड ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें डॉ. अरुण कुमार सिंह वैज्ञानिक वागवानी अनुसन्धान केंद्र प्लांडू, संतोष कुमार उप निदेशक कृषि विभाग, डॉ प्रभाकर महापात्र वैज्ञानिक विरसा कृषि विश्व विद्यालय, नूतन वर्मा सहायक प्राध्यापक, पुष्पा जी शस्य विज्ञान, मुकेश कुमार सिन्हा उप निदेशक कृषि विभाग, रोशन नीलकमल सहायक निदेशक कृषि विभाग मौजूद रहे। इसमें बीके निर्मला ने कहा कि मिट्टी की सुरक्षा के लिए पर्यावरण सुरक्षा जरूरी है।

सूई-धागा रेस में महिलाओं ने उत्साह से लिया भाग

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। रेडियो मधुबन-90.4 एफएम द्वारा द्वारा महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा के विरुद्ध जागरूकता फैलाने के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रम हिंसा को कहें ना के दो वर्ष हुए पूरे होने पर गणका गांव में उत्सव मनाया गया। खेलकूद प्रतियोगिता जैसे नींबू -चम्मच रेस, सुई-धागा रेस, बाल इन बास्केट, दो टांग रेस का सफल आयोजन हुआ। सुई धागा रेस में गांव की महिलाओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। सरपंच ललिता गरासिया, आरजे उषा माहेश्वरी ने संचालन किया। आरजे अश्विनी और शुभाश्री ने जज की भूमिका निभाई।

ब्रह्माकुमारीज़ राजकोट: श्रेष्ठ समाज सेवकों का किया समान

शिव आमंत्रण, राजकोट (गुजरात)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा समाज सेवा प्रभाग की ओर से मूल्यों से सम्पन्न समाज विषय पर आयोजित कार्यक्रम में श्रेष्ठ समाज सेवकों का सम्मान किया गया। समाजसेवा प्रभाग की अध्यक्ष बीके संतोष ने कहा कि आप सभी समाज को ऊंचा उठाने की सेवा कर रहे हैं, इसलिए अभिनंदन के पात्र हैं। किन्तु अभी जरुरत है कि स्व की सेवा पर अधिक ध्यान दिया जाए। प्रभाग की सदस्य बीके रीटा ने सभी का स्वागत किया। अन्त में मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। बीके विवेक ने संचालन किया। बीके नितिन ने अपने मधुर गीतों से सभी का स्वागत किया।

सार समाचार

ओआरसी का 21वां वार्षिक उत्सव मनाया

संस्था जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर महान कार्य कर रही है: केंद्रीय मंत्री ठाकुर

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम/हरियाणा। अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों का बोध भी जरूरी है। युवा पीढ़ी को इस बात का अहसास कराना होगा। उक्त विचार भारत सरकार के केंद्रीय खेल, युवा और सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने ब्रह्माकुमारीज के गुरुग्राम स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर के 21 वें वार्षिकोत्सव पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि दुनिया में महिलाओं को उचित सम्मान नहीं मिलता है। लेकिन भारत में महिलाओं की देवियों के रूप में पूजा होती है। ब्रह्माकुमारीज का तो नेतृत्व खुद मातृशक्ति के हाथों में है। संस्था जाति, धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर एक महान कार्य कर रही है। जब विज्ञान समाधान देने में असफल होता है, तब आध्यात्म की शुरुआत होती है। हमें एक दूसरे से नहीं लड़ना है। अगर सबसे बड़ी लड़ाई लड़नी है तो नशे और बुराइयों के खिलाफ लड़नी है।

निरंजनी अखाड़ा, हरिद्वार के महामंडलेश्वर स्वामी हरिओम ने कहा कि आज हर व्यक्ति को सुख-शांति और सौहार्द्र की आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारीज इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। जैन मुनि लोकेश ने कहा कि जब मन की ममता चेतना से जुड़ती है तो भगवान पैदा होता है। ब्रह्माकुमारीज विश्व का सबसे अनूठा संगठन है। पूरे विश्व में संस्था शांति की पुनर्स्थापना का कार्य कर रही है। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, ओआरसी की निदेशिका आशा दीदी, विधायक सुधीर कुमार सिंगला, फादर फेलिक्स जॉन, निर्देशक इंटरफैथ, दिल्ली एवं शीला काकड़े, अध्यक्ष, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में पांच हजार से अधिक लोग मौजूद रहे।

स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

शिव आमंत्रण, कादमा (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज के कादमा सेवाकेंद्र द्वारा बीके अमीरचंद की द्वितीय स्मृति दिवस पर निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सरपंच चांदपती देवी, समाजसेवी कसान रामअवतार थालौर, अशोक थालौर, महेश फौजी, सुरेंद्र, सुबे स्वामी पंच, बीके वसुधा आदि ने बीके अमीरचंद के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

महिलाएं- नए भारत की ध्वजवाहक

शिव आमंत्रण, भोपाल (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के करौंद सेवाकेंद्र पर महिलाएं- नए भारत की ध्वजवाहक कार्यक्रम आयोजित किया गया। निशातपुरा थाना क्षेत्र की एसीपी रिचा जैन ने कहा कि आज नारी शक्ति को अपने अधिकारों को जानना होगा और समाज में रहते हुए अपने अधिकारों के प्रति सजग होना पड़ेगा। सेवाकेंद्र संचालिका बीके मधु ने कहा कि नारी शक्ति शिव शक्ति है। जब एक नारी कन्या होती है तो भी लोग उसे देवी के रूप में पूजते हैं और शादी होती है तो भी लोग उसे देवी कहते हैं। एडवोकेट शकुंतला चौबे, सुषमा सक्सेना करणी सेना से पधारीं ममता राजपूत, सुषमा राजपूत, सुरभि सक्सेना, बीके बहादुर भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

रजत जयंती महोत्सव] ब्रह्माकुमारीज़ पालम विहार, गुरूग्राम का आयोजन

जीवन मूल्यों से लोगों में सुधार ला रही है संस्था

शिव आमंत्रण, पालम विहार (हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के पालम विहार सेवाकेंद्र की स्थापना के 25 साल पूरे होने पर नॉर्थकैप यूनिवर्सिटी गुरुग्राम में रजत जयंती समारोह आयोजित किया गया। संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बी.के. जयंती का सम्मान भारतीय विदेश नीति परिषद और, नॉर्थकैप यूनिवर्सिटी के डीन प्रो. मनोज गोपालिया, गुरुग्राम विश्वविद्यालय के डीन अकादमिक प्रोफेसर सुभाष सी कुंडू, आधुनिक कला राष्ट्रीय गैलरी के महानिदेशक अद्वैत गडनायक, मदर्स प्राइड एंड नॉलेज ट्री की चेयरपर्सन सुधा गुप्ता, आंचलिक प्रशिक्षण केंद्र, उत्तरी अंचल के अपर निदेशक एम.के. खेमू, गोवा कंट्री क्लब की निदेशक सुनीता जोशी, महाराजा अग्रसेन कॉलेज ऑफ नर्सिंग के निदेशक एमके बंसल, इंडो रामा कॉर्पोरेशन के बिजनेस हेड आरडी गुप्ता आदि ने किया। इस दौरान बीके आशा, बीके शुक्ला, नॉर्थकैप यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. डॉ. प्रेम व्रत ने अपने विचार व्यक्त किए। भारतीय भाषा सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एकमात्र ऐसी संस्था है जो न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में जीवन मूल्यों और सद्गुणों के माध्यम से मनुष्यों में सुधार लाने के लिए काम कर रही है। मैं इनके ब्रह्मचर्य के पालन की सराहना करता हूं। डॉ. मंजू गुप्ता ने पालम विहार केंद्र का इतिहास साझा किया। उन्होंने बीके उर्मिल, बीके सुदेश एवं बीके वीरेंद्र द्वारा बचपन से ही इस ईश्वरीय ज्ञान को लोगों तक पहुंचाने की अथक मेहनत की सराहना की। पालम विहार केंद्र की निदेशिका बीके उर्मिल ने सुंदर कमेन्ट्री से मेडिटेशन का अभ्यास कराया। बीके सुदेश, बीके वीरेंद्र ने सबका स्वागत किया। संचालन जीबी पंत अस्पताल के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. मोहित गुप्ता ने किया।

सार समाचार

शिक्षा प्रभाग का तीन दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित

शिव आमंत्रण, जयपुर/राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज के राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के शिक्षा प्रभाग का तीन दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन पीस पैलेस, मुरलीपुरा, जयपुर में आयोजित किया गया। इसमें देशभर से सौ से अधिक प्रभाग से जुड़े विद्वानों ने भाग लिया। तीन दिन तक सभी विद्वानों ने गहन-चिंतन मनन कर निष्कर्ष निकाला कि यदि युवा पीढ़ी और बच्चों को मूल्यों से जोडना है, उन्हें आध्यात्म और मेडिटेशन से जोडना है तो अनिवार्य रूप से इसके लिए उन्हें एकेडमिक सेशन में यह शिक्षा किसी न किसी रूप में देना होगी। साथ ही पहली से आठवीं तक के बच्चों को कहानियों, खेल-खेल में मूल्य शिक्षा देने पर जोर दिया। वहीं आठवीं से 12वीं तक के बच्चों को मेडिटेशन का महत्व बताने, याददाश्त बढ़ाने, सफलता प्राप्त करने के गुर बताते पर सभी ने जोर दिया। वहीं कॉलेज- यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को भी सफल जीवन, विद्यार्थी जीवन का सदुपयोग और आध्यात्मिक शिक्षा देने पर जोर दिया। इस अधिवेशन में पीएचडी डिग्रीधारी, रिसर्चर, कॉलेज-यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, लेक्चरर, प्राचार्य और स्प्रिचुअल कांउन्सलर ने भाग लिया।

राजयोग केंद्र में कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, लॉस एंजेलिस (यूएसए)। ब्रह्माकुमारीज़ के लॉस एंजेलिस सेवाकेंद्र द्वारा सनातन धर्म मंदिर नॉरवॉक, सीए शहर में भीतर के प्रकाश को प्रज्वलित करने विषय पर सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी बहनों ने सभी को राजयोग मेडिटेशन के बारे में विस्तार से बताया।

नवापारा में गीता जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में मौजूद अतिथि।

गीता सुनकर मन गीत गाने लगे यही है गीता का 'गीत'

शिव आमंत्रण, नवापारा/छग। जीवन को सुखमय, आनंदित मंगलकारी बनाने वाला अगर कोई ग्रंथ है तो वह है गीता। जिससे जीवन की तमाम समस्याओं का समाधान मिलता है। मुक्ति-जीवनमुक्ति की चाहना रखने वालों को राह दिखाती है, इसीलिए इसको मोक्षदायिनी भी कहा गया है। गीता अर्थात् जिसके रहस्यमई ज्ञान को सुनकर उदास चिंतित मन गदगद, अति प्रसन्न आनंदमय हो जाए। यह विचार इंदौर से पधारे धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर बीके नारायण भाई ने ओम शांति कॉलोनी त्रिमूर्ति भवन सेवाकेंद्र पर आयोजित गीता जयंती महोत्सव में व्यक्त किए। कार्यक्रम में पं. ब्रह्मदत्त शास्त्री ज्योतिष भूषण वास्तु विद्याभारती, वसुमित्र दीवान नायब तहसीलदार, नवीन प्राथमिक पाठशाला के प्राचार्य गोपाल यादव, सेवाकेंद्र संचालिका पुष्पा दीदी, कबीर आश्रम से पधारे महाराज सेवादास ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन बीके प्रिया ने किया।

आध्यात्म से होगी मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना

शिव आमंत्रण, सागर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सागर सेवाकेंद्र द्वारा समाज सेवा प्रभाग के तहत समाज सेवकों का सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें डॉ. के कृष्णा राव (प्रोफेसर, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर) ने माउंट आबू का अनुभव सुनाते हुए कहा कि वहां का वातावरण इतना सुंदर और शक्तिशाली है कि उसके संपर्क में रहने के बाद हम जब समाज में आकर सेवा करते हैं तो एक नई ऊर्जा, एक नए उत्साह के साथ करते हैं। ब्रह्माकुमारीज के संपर्क में आने के बाद हम चिंता मुक्त हो जाते हैं और अपनी सेवाएं सुंदर तरीके से समाज तक पहुंचा पाते हैं।
सेवाकेंद्र प्रभारी बीके छाया दीदी ने सभी को परमात्मा शिव का संदेश भी सुनाया। समाजसेवी लता वानखेड़े, बीके लक्ष्मी, प्रकृतिप्रेमी महेश तिवारी, बीके कल्पना, बीके दीपिका ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके संध्या ने किया। शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक बीके पुष्पेंद्र ने आभार माना। इस दौरान बीके सीता, बीके किरण, बीके हेमा, बीके सुनील, बीके गोविंद, बीके देवेंद्र, संजय पाण्डे सहित शहर के जाने-माने समाजसेवी मौजूद रहे।

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का दिया संदेश

शिव आमंत्रण, केसली/सागर/मप्र। ग्राम खापा में आदिवासी सम्मेलन एवं मढ़ई महोत्सव आयोजित किया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके संध्या ने संस्थान की गतिविधियों को बताते राजयोग मेडिटेशन अपनाने के लिए कहा। भाई-बहनों ने लघु नृत्य नाटिका से बेटी पढ़ाओ-सशक्त बनाओ ड्रामा, व्यसन मुक्ति का संदेश दिया।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य 150 रुपए, तीन वर्ष 450
आवन 3500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org
View letest news shivamantran.com

रसिया] अमृत महोत्सव के तहत परिवर्तन की शक्ति कार्यक्रम आयोजित

सभी परिवर्तन हमारे भीतर से शुरू होते हैं

» शिव आमंत्रण, मॉस्को (रशिया)। ब्रह्माकुमारीज मॉस्को सेवाकेंद्र द्वारा भारत की आजादी के अमृत महोत्सव के तहत परिवर्तन की शक्ति उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सुधा और बीके विजय के साथ आमंत्रित अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस मौके पर जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के कार्यक्रम अधिकारी राकेश कुमार, परिवार और बाल कल्याण सहायता केंद्र वोस्तोचनॉय डेगौनिनो की निदेशिका गैलिना पाचेको-रेनागा और रूस के सम्मानित सांस्कृतिक कार्यकर्ता डॉक्टर कोंगोव गोर्डिना शामिल थीं।

जेएनसीसी केंद्र के कलाकारों ने समृद्ध और स्वर्णिम भारत की झलक दिखाता सुंदर गीत और नृत्य प्रस्तुत कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। ब्रह्माकुमारी सुधा ने व्हाइट फेयरी का प्रतिनिधित्व करते हुए बताया कि सभी परिवर्तन हमारे भीतर से शुरू होते हैं। केवल एक परमात्मा ही हैं जो कि हमारी आंतरिक शक्ति को जागृत करने में हमारी मदद कर सकते हैं। वह सर्वोच्च शक्ति हैं। वह ही हम आत्माओं को सांवरे से गोरा बनाते हैं।

जीवन को खुशियों से भरने के लिए वरदान साबित होगा वरदानी भवन

» शिव आमंत्रण, ललितपुर/उप्र। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के वरदानी भवन सेवाकेंद्र की दसवीं वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई। सेवाकेंद्र निदेशिका बीके चित्रलेखा दीदी ने कहा कि 10 वर्ष पूर्व 2012 को वरदानी भवन की नींव रखी गयी थी। लोगों के निःस्वार्थ सहयोग, त्याग से कब यह भवन बनकर तैयार हो गया पता ही नहीं चला। यहाँ सभी आकर परमात्म वरदान लेते रहें। बीना से पधारीं बीके सरोज दीदी ने कहा कि खुशी जीवन का गहना है। जीवन में सबकुछ चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाए। खुरई से पधारीं बीके किरण दीदी ने कहा कि परमात्मा जो ज्ञान दे रहे हैं, उसे अपने जीवन में धारण करेंगे तो हमारा जीवन महान, दिव्य बन जाएगा। बीके मायारानी दीदी ने कहा कि आप सभी के पास कलम की ताकत है, उसे नेक और महान कार्यों में लगाएं। बीके जानकी दीदी ने राजयोग की गहन अनुभूति कराई। वरिष्ठ पत्रकार बीके पुष्पेंद्र ने पत्रकारों से आह्वान किया कि रोज कम से कम एक सकारात्मक खबर जरूर प्रकाशित करें, जिससे समाज में नई प्रेरणा मिल सके। इस दौरान शहर के सभी पत्रकारों का सम्मान किया गया।

आठ दिवसीय मेरा ग्वालियर व्यसन मुक्त ग्वालियर अभियान आयोजित

» शिव आमंत्रण, लश्कर/ग्वालियर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग द्वारा राष्ट्रीय अभियान मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत के अंतर्गत 'मेरा ग्वालियर व्यसन मुक्त ग्वालियर' आठ दिवसीय अभियान चलाया गया। समापन कार्यक्रम में महापौर डॉ. शोभा सिंह सिकरवार ने कहा कि संस्थान समाज उत्थान के लिए बहुत ही कल्याणकारी कार्य कर रहा है। यहां से हम सभी को इन लोगों से प्रेरणा लेनी चाहिए और समाज में जो यह बुराई फैली हुई है उसको मिटाने में इनका सहयोगी बनना चाहिए। भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य आशीष प्रताप सिंह ने कहा कि मॉडर्न युग में युवा आज भ्रमित है। नशा युवाओं के लिए आज फैशन बन गया है, जो की पूरी तरह से गलत है। युवाओं को मेडिटेशन से जुड़ना चाहिए। डॉ. आरके एस धाकड़ ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ समाज में फैली बुराई को ठीक करने का कार्य कर रही है। इस दौरान डॉ.राहुल सप्रा (अध्यक्ष इंडियन मेडिकल एसोसिएशन), डॉ. ब्रजेश सिंघल (सेक्रेटरी,आईएमए), सेवाकेंद्र इंचार्ज बीके आदर्श दीदी, बीके डॉ.गुरुचरण और बीके प्रहलाद भी विशेष रूप से मौजूद रहे।

लखनऊ से आत्मनिर्भर किसान अभियान का शुभारंभ

» शिव आमंत्रण, लखनऊ (उप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्रामीण विकास प्रभाग द्वारा आत्मनिर्भर किसान अभियान का शुभारंभ लखनऊ से किया गया। इसमें चार दिव्य किसान सेवारथ गांव की सेवा के लिए रवाना किए गए। यह किसान सेवारथ 15 दिन तक विभिन्न गांवों का भ्रमण करके किसानों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्राकृतिक यौगिक खेती के तरीके सिखाएंगे। किसानों को आर्थिक सामाजिक और मानसिक रूप से सशक्त बनाना इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है। अभियान का शुभारम्भ कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही तथा अपर मुख्य सचिव कृषि डॉ. देवेश चतुर्वेदी ने किया। कृषि विभाग के सहायक निदेशक बद्री विशाल तिवारी ने अभियान का उद्देश्य बताते हुए कहा कि हमारा देश किसानों के कारण ही सोने की चिड़िया कहलाता था। किसान जब मानसिक रूप से सशक्त होता है तो वह विषमुक्त और स्वास्थ्यवर्धक अनाज पैदा करता है, जिससे कि वह स्वयं तो खुशहाल होता ही है। शुद्ध अन्न के कारण उसको खाने वाले लोग भी विभिन्न प्रकार की बीमारियों से मुक्त खुशहाल जीवन व्यतीत करते हैं। इस अभियान द्वारा अन्न और मन दोनों को शुद्ध करने का प्रयास किया जाएगा। यदि अन्न और मन शुद्ध हो जाए तो भारत में फिर से रामराज्य की स्थापना हो सकती है।

अध्यक्षता लखनऊ सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके राधा ने की। संचालन बीके स्वर्ण लता ने किया। कार्यक्रम में कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारी और किसान बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

संकल्प बीज है, सिद्धी परिणाम

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। पर्व-त्योहार और नए साल पर हम बड़े-बड़े संकल्प करते हैं। कुछ दिन उन पर अमल भी करते हैं। नए संकल्प के अनुसार हमारी दिनचर्या या आदत होती है। धीरे-धीरे समय के साथ हमारा वह संकल्प कमजोर पड़ने लगता है। एक दिन हम फिर से वही पुरानी दिनचर्या या जिंदगी जीने लगते हैं। इसके पीछे हम कभी गौर भी नहीं करते हैं कि आखिर क्यों उस संकल्प को मंजिल तक नहीं ले जा सके? क्यों उसे बीच में छोड़ना पड़ा? क्यों चंद दिनों के बाद हतोत्साहित हो गए? क्यों उसे पूरा करना हमें असंभव लगने लगा।

दरअसल इसके समुचित पहलुओं पर नजर डालें तो एक बात निकलकर सामने आती है कि हम कोई भी नया संकल्प जल्दबाजी में, भावनाओं में आकर और उत्साह में आकर ले लेते हैं लेकिन वह पूरा कैसे होगा इसकी विधिवत प्लानिंग नहीं करते हैं। उस पर पर्याप्त अध्ययन और तैयारी नहीं करते हैं। जबकि होना यह चाहिए कि कोई भी नई आदत बनाने के लिए या हमारे द्वारा लिए गए किसी नए संकल्प को पूरा करने के लिए उसकी पूर्व प्लानिंग की जाए। उसे पूरा करने में किन-किन बाधाओं का सामना करना पड़ेगा और उन बाधाओं से कैसे निकलेंगे, किन परिस्थितियों में हमें उस संकल्प को साधने में सबसे ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है, आदि बातों को गहराई से चिंतन के बाद एक डायरी में नोट करना जरूरी है। फिर पूरी तैयारी के साथ संकल्प करें और उसे पूरा करने में जी-जान लगा दें।

जब हम किसी नए संकल्प को पूरा करते हैं और मंजिल तक ले जाते हैं तो उससे हमारे अंदर एक नए आत्म विश्वास का जन्म होता है। इससे हमें जो खुशी और शक्ति मिलती है वह आगे बढ़ाने में प्रेरणा का कार्य करती है। हम खुद की नजरों में उठ जाते हैं और सम्मान बढ़ जाता है। आंतरिक खुशी मिलती है और मानसिक संतुष्टी बढ़ती है। फिर हम अपनी सफलता को दूसरों के लिए गर्व के साथ बता सकते हैं। इससे अन्य लोगों को भी हमारे जीवन से प्रेरणा मिलती है। यह बात भी तय है कि जब कोई नया कार्य या लक्ष्य प्राप्ति की ओर पहला कदम बढ़ाते हैं तो उसके साथ ही नए तरह की परीक्षाएं और बाधाएं हमारे सामने होती हैं। यही वह समय होता है जब हमें रुककर आत्मचिंतन की जरूरत होती है।

हर कर्म में परमात्मा को साथी बना लो तो सब आसान हो जाएगा।

नए संकल्प को मन में रोज दोहराएं: जैसे यदि नए साल पर आपने सुबह जल्दी उठने का संकल्प लिया है तो उसे मन ही मन रोज दोहराएं। रात में सोने से पूर्व अपने मन को निर्देश दे दें और दृढ़ संकल्प के साथ सोएं कि मुझे सुबह हर हाल में उठना ही है। सुबह जैसे ही आंख खुले और आलस्य आए कि थोड़ी देर बाद उठते हैं तो अपने उस संकल्प को याद कर लें कि मैंने संकल्प लिया था और उसे हर हाल में पूरा करना ही है। सुबह जल्दी उठने के लिए जरूरी है कि रात में जल्दी सोना। इसके लिए पूरी प्लानिंग पहले से करना जरूरी है। इसके साथ ही जीवन के हर कर्म में परमात्मा पिता को भी साथी बना लेंगे तो वह सहज और सरल हो जाएगा। रात में सोने के पूर्व परमात्मा का आह्वान करें कि मेरे साथी, मेरे दोस्त आपको सुबह... बजे हर हाल में जगाना है। फिर देखिए कैसे वह आपको बिना अलार्म के जगाता है। किसी कार्य में ईश्वर पर आस्था और विश्वास रखने के साथ उन्हें साथी बनाकर करने से वह आसान हो जाता है। यही नियम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होता है। कोई भी नए संकल्प को हम पूरा कर सकते हैं।

सदा लक्ष्य याद रखें: हमने जो संकल्प लिया है उसका लक्ष्य और उद्देश्य सदा याद रखें। मन को समझाएं कि आज के थोड़े से त्याग से कैसे हम बड़े लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। जीवन की गाड़ी कैसे दौड़ानी है, इसमें हमारे विचारों और मन का सबसे अहम रोल है। मन की दिशा यदि सकारात्मक, संतुलित, संयमित और समय के अनुकूल है तो निश्चित है कि कठिन से कठिन संकल्प को हम पूरा कर सकते हैं। एक समान परिस्थिति में एक व्यक्ति उसे अवसर के रूप में देखता है तो दूसरा उसे आफत के रूप में। जब संकल्पों में महानता, विशालता और दूरदर्शी दृष्टिकोण समां जाता है तो वह हर लक्ष्य को भेदने में सक्षम होता है। कहा भी जाता है संकल्प से सिद्धी। संकल्प बीज है तो सिद्धी उसका परिणाम।

स्मृति विशेष] 18 जनवरी पिताश्री ब्रह्मा की पुण्यतिथि

विश्व शांति के 'महानायक' प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

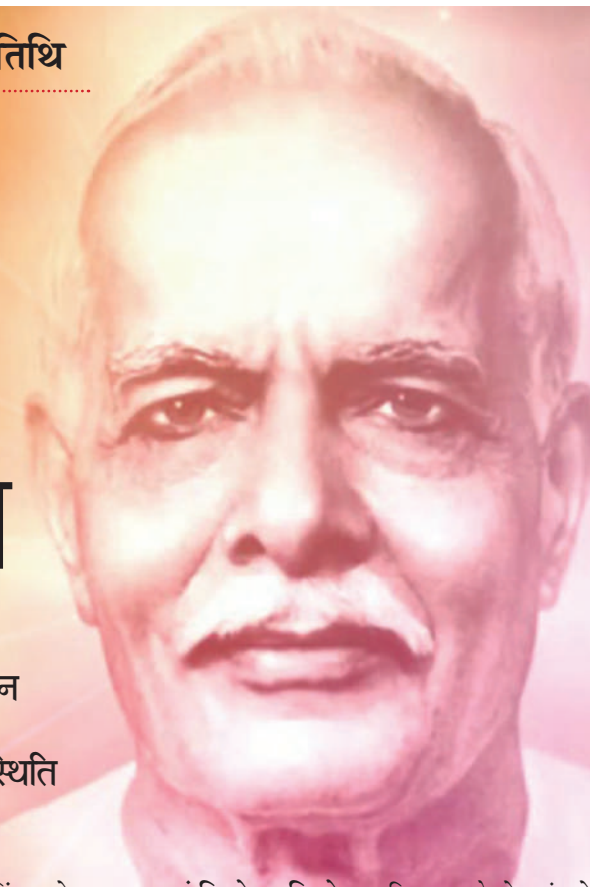

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा विश्व शांति के मसीहा बन गए हैं। वह सन् 1937 से सन् 1969 तक की 33 वर्ष की अवधि तक तपस्यारत रहे। वे 'संपूर्ण ब्रह्मा' की उच्चतम स्थिति को प्राप्त कर आज भी फरिश्ते रूप में विश्व सेवा कर रहे हैं।

इस दुनिया में कुछ लोग इतिहास बनाते हैं तो कुछ लोग ऐसे कर्म कर जाते हैं जो स्वयं इतिहास बन जाते हैं। वह अपने पीछे ऐसे निशान छोड़ जाते हैं जो करोड़ों लोगों के लिए मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक और प्रेरणास्त्रोत बन जाते हैं। ऐसी महान, तपस्वी, पुण्यात्मा, दिव्यगुणों से संपन्न, नई दुनिया के आधार स्तम्भ बने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। जिन्हें स्वयं परमपिता शिव परमात्मा ने अपना आधार स्तम्भ बनाया, उनके शरीर रूपी रथ का उपयोग किया। साथ ही सृष्टि के नवनिर्माण की आधारशिला रखी। आइए जानते हैं दादा लेखराज कैसे प्रजापिता ब्रह्मा बने और विश्व शांति के महानायक....

15 दिसंबर सन् 1876 में सिंध के कृपलानी परिवार में एक बालक का जन्म हुआ। जिसका नाम रखा गया लेखराज। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि आगे चलकर यह बालक परमपिता शिव परमात्मा के रथ के रूप में नई सतयुगी दुनिया के स्थापना के कार्य में युगपुरुष की भूमिका निभाएगा। लेखराज के माता-पिता बल्लभाचारी भक्त थे। वह एक स्कूल में प्रधानाध्यापक थे। वहीं माता भी नारायण की अनन्य भक्त थीं। उनकी सुबह भक्ति से शुरू होती थी और रात भी भक्ति में खत्म होती थी। लेखराज के माता-पिता का क्षेत्र में काफी प्रभाव था और लोग उन्हें आदरभाव देते थे। लेखराज को भक्तिभाव के संस्कार बचपन में ही विरासत के रूप में मिले।

भक्ति-भावना और नियम के पक्के जवाहरात के व्यवसाय के कारण दादा लेखराज का संपर्क उस काल के राजपरिवारों से काफी घनिष्ट हो गया। विपुल धन-संपदा और मान-प्रतिष्ठा पाकर भी उनके स्वभाव में नम्रता, मधुरता और परोपकार की भावना बनी रही। उन्होंने किसी भी परिस्थिति में, किसी भी प्रलोभन के वश अपनी भक्ति-भावना और धार्मिक नियमों को नहीं छोड़ा। कई बार ऐसा होता था कि कुछ राजाओं तथा धनाढ्य व्यापारियों का दादा के यहां भोज होता तो भी दादा उन्हें शुद्ध शाकाहारी भोजन ही देते। कई बार ऐसा भी संयोग होता कि किसी राजा या अन्य विशिष्ट व्यक्ति का दादा के यहां अतिथि के तौर पर गाड़ी द्वारा ऐसे समय पर आना होता जब दादा के भक्ति-पूजा या गीता-पाठ का समय होता, तब दादा उनके स्वागत पर स्वयं न जाकर अन्य किसी को भेज देते परंतु वे नित्य-नियम न तोड़ते। इस प्रकार वे दृढ़ प्रतिज्ञा एवं नियम के पक्के थे।

वे श्री नारायण की अनन्य भक्ति किया करते थे और उनका चित्र सदा अपने पास रखा करते थे। मधुर स्वभाव और प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक थे। उनका मस्तिष्क उन्नत, शरीर सुडौल, मुखमंडल कांतियुक्त और होंठों पर सदा मुस्कान रहती थी। 90 वर्ष की आयु में भी वे सीधी कमर बैठ सकते थे, दूर तक अच्छी रीति देख सकते थे, धीमी आवाज भी सुन सकते थे, पहाड़ों पर चढ़ सकते थे, बैडमिंटन खेल सकते थे और बिना किसी सहारे के चलते थे। वे प्रतिदिन 18-20 घंटे कार्य करते थे।

> दादा का मधुर स्वभाव और प्रभावशाली व्यक्तित्व था। उनका मस्तिष्क उन्नत, शरीर सुडौल, मुखमंडल कांतियुक्त और होंठों पर सदा मुस्कान रहती थी।

> आलस्य और निराशा ने तो कभी उनका स्पर्श तक नहीं किया। राजकलोचित व्यवहार, शिष्ट-मधुर स्वभाव और उज्ज्वल चरित्र के कारण उनकी उच्च प्रतिष्ठा थी।

इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनका जीवन कैसे संयम-नियम से युक्त तथा स्वस्थ रहा होगा। आलस्य और निराशा ने तो कभी उनका स्पर्श तक नहीं किया। राजकलोचित व्यवहार. शिष्ट-मधुर स्वभाव और उज्ज्वल चरित्र के कारण उनकी उच्च प्रतिष्ठा थी। दादा स्वभाव से ही उदारचित्त और दानी थे। हैदराबाद के प्रसिद्ध दानी काका मूलचन्द आजवाला उनके चाचा थे। दादा भी उनके साथ ही उनकी बैठक पर पीड़ित लोगों को खूब दान दिया करते थे।

अलौकिक जीवन का प्रारंभ..

दिव्य साक्षात्कारों द्वारा दादा का व्यापारिक और पारिवारिक जीवन, लौकिक दृष्टि से सफल एवं संतुष्ट जीवन था। परंतु जब दादा लगभग 60 वर्ष के थे तब उनका मन भक्ति की ओर अधिक झुक गया। वे अपने व्यापारिक जीवन से अवकाश निकाल कर ईश्वरीय मनन-चिंतन में लवलीन तथा अन्तर्मुखी होते गए। अनायास ही एक बार उन्हें विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ और उसने अव्यक्त शब्दों में दादा से कहा - **अहम् चतुर्भुज तत् त्वम्** अर्थात् आप अपने वास्तविक स्वरूप में श्री नारायण हो। कुछ समय के बाद वाराणसी में वे अपने एक मित्र के यहां एक वाटिका में जब ध्यान अवस्था में थे, तब उन्हें परमपिता परमात्मा ज्योतिर्लिंगम् शिव का साक्षात्कार हुआ और उन्होंने इस कलियुगी सृष्टि का अणु व बम, गृह युद्धों और प्राकृतिक आपदाओं द्वारा महाविनाश होते देखा। दादा को जिन दिनों यह साक्षात्कार हुआ, उन दिनों अमेरिका और रूस ने ऐसे बम बनाए भी नहीं थे। जब दादा को ये साक्षात्कार हुए, तो उन्हें अन्तः प्रेरणा हुई कि अब व्यापार को समेटना चाहिए। अतः दादा ने कोलकाता में जाकर अपने भागीदार को अपने दृढ़ संकल्प से अवगत कराया और फिर दादा व्यापार से अलग हो गये।

> ✓ दादा व्यापारिक जीवन से अवकाश निकाल कर ईश्वरीय मनन-चिन्तन में लवलीन तथा अन्तर्मुखी होते गए।

परमात्मा शिव का दिव्य प्रवेश...

इसके कुछ ही दिनों के बाद, एक दिन जब दादा के घर में सत्संग हो रहा था, तब दादा अनायास ही सभा से उठकर अपने कमरे में जा बैठे और एकाग्रचित्त हो गए। तब उनके जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण वृत्तांत हुआ। उनकी धर्मपत्नी व बहू ने देखा कि दादा के नेत्रों में इतनी लाली थी कि जैसे उनके अंदर कोई लाल बत्ती जग रही हो, दादा का कमरा भी प्रकाशमय हो गया था। इतने में एक आवाज ऊपर से आती हुई मालूम हुई जैसे कि दादा के मुख से दूसरा कोई बोल रहा हो। **आवाज के ये शब्द थे- निजानंद स्वरूपं शिवोहम् शिवोहम्, ज्ञान स्वरूपं शिवोहम् शिवोहम्, प्रकाश स्वरूपं शिवोहम् शिवोहम्।** फिर दादा के नेत्र बंद हो गए। कुछ क्षण के पश्चात् जब उनके नयन खुले तो वे कमरे में आश्चर्य से चारों ओर देखने लगे। उनसे जब पूछा गया कि वे क्या देख रहे हैं तो उनके मुखारबिंद से ये शब्द निकले- वह कौन था? एक लाइट थी। कोई माइट शक्ति थी। कोई नई दुनिया थी। उसके बहुत ही दूर, ऊपर सितारों की तरह कोई थे और जब वे स्टार नीचे आते थे तो कोई दैवी राजकुमार बन जाता था तो कोई दैवी राजकुमारी बन जाती थी। उस लाइट और माइट ने कहा कि यह ऐसी दुनिया तुम्हें बनानी है। परंतु मैं ऐसी दिव्य दुनिया कैसे बना सकूंगा? .. वह कौन था? कोई माइट थी, एक लाइट थी..। उन्होंने ही दादा को नई, सतयुगी दैवी सृष्टि की पुनर्स्थापना के लिए निमित्त बनने का निर्देश दिया था। अब दादा परमात्मा शिव के साकार माध्यम बने। ज्योतिर्बिंदु परमात्मा शिव ब्रह्मलोक से आकर दादा के तन में प्रविष्ट होते और उनके मुख द्वारा ज्ञान एवं योग के ऐसे अद्भुत रहस्य सुना कर चले जाते जो प्रायः लुप्त हो चुके थे।

दादा के मुख द्वारा परमपिता शिव ने बताया कि सभी दुःखों एवं समस्याओं का मूल देह-अभिमान एवं छः मनोविकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य है। अतः इन पर विजय पाना जरूरी है। इसलिए हरेक को आहार-विहार, संग इत्यादि को सात्विक बनाने के लिए कहा गया तथा यह बताया गया कि विश्व एक अभूतपूर्व चारित्रिक संकट के दौर से गुजर रहा है, इसलिए अब सभी को ब्रह्मचर्य का पालन करना जरूरी है। इसके बिना योगी बनना अथवा अन्य विकारों पर पूर्ण विजय पाना असंभव है।

परमपिता परमात्मा शिव ने दादा को नाम दिया - प्रजापिता ब्रह्मा। सन् 1937 में हैदराबाद के सिंध प्रांत में ओम मंडली के नाम से विश्व परिवर्तन के कार्य की नींव रखी गई। लगभग 14 वर्ष तक ईश्वरीय ज्ञान तथा दिव्य गुणों की धारणा का और निरंतर योग तपस्या करने के बाद सन् 1951 में माउंट आबू स्थानांतरण के बाद संस्था का नाम 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' रखा गया। यहां से ब्रह्मा बाबा ने शिव शक्तियों को परमात्म संदेश देने के लिए भारत के कोने-कोने में भेजा। जिन्होंने इस परमात्म ज्ञान को अपने जीवन में संपूर्ण रीति धारण किया वह ब्रह्माकुमार- ब्रह्माकुमारी कहलाए। योग-तपस्या और साधना से बाबा का व्यक्तित्व इतना शक्तिशाली बन गया था कि उनके संपर्क में आने वालों को दिव्य अनुभूतियां होने लगीं। 18 जनवरी 1969 को संपूर्णता की स्थिति प्राप्त कर हम सबके प्यारे पिताश्री ब्रह्मा बाबा भौतिक दुनिया को छोड़कर अव्यक्त हो गए। इसके बाद राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि को संस्थान की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया। जिनके मार्गदर्शन में विश्व के 137 देशों में आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का संदेश जन-जन तक पहुंचा, जो आज भी जारी है...

■ RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 October 2022
■ स्वामीः राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन ■ प्रकाशक, संपादक व मुद्रक : ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित। ■ संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र